वर्ष-15, अंक-08 वि.सं. 2076, युगाब्द 5121 अक्टूबर 2019 मूल्य : 20.00
सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

150

बापू... क्या खोया क्या पाया?

गाँधी के सपनों को जीता संघ

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

वर्ष-15, अंक-08 | वि.सं. 2076, युगाब्द 5121 | अक्टूबर 2019 | मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मार्गदर्शक

डॉ0 अवधेश प्रसाद सिंह
अध्यक्ष

डॉ0 देवेन्द्र प्रताप सिंह
सचिव

राहुल सिंह
सहसचिव

ब्रह्मदेव शर्मा
संस्थापक न्यासी

सम्पादक
डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी
मो. 09451176775

सह सम्पादक
राजेश
मो. 09793120738

प्रबन्धक
विजय अग्रवाल
मो. 9415020996

मुद्रक एवं प्रकाशक
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
मो. 9415003111

कार्यालय : **भाऊराव देवरस सेवा न्यास**
सी-91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) 226020
दूरभाष : 0522-4001837, 2789406
Email : sewasamwad@gmail.com

आलोक : *प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं।*
प्रकाशक एवं सम्पादक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सहयोग राशि नकद अथवा चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'सेवा संवाद (भाऊराव देवरस सेवा न्यास)' के पक्ष में जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें अथवा हमारे बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ (IFSC : BKID0006806) के खाता संख्या 680610110000102 में जमा/अन्तरित करा कर कार्यालय पते पर सूचित करने की कृपा करें।

इस अंक में

1.	अपनी बात	डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी	5
2.	आत्मावलोकन	राजेश	6
3.	महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती	नरेन्द्र मोदी	8
4.	गाँधी मार्ग का अभिभावक अनुपम मिश्र	मनोज कुमार झा	11
5.	गाँधी जी की मानव दृष्टि : नियति और संभावना	गिरीश्वर मिश्र	14
6.	महात्मा गाँधी : समाज सुधारक	पंकज चतुर्वेदी	16
7.	गाँधीजी और स्वच्छता	सुदर्शन अयंगर	18
8.	महात्मा और संघ	डॉ0 मनमोहन वैद्य	21
9.	चरखे का सन्देश	संकलन	23
10.	गाँधीजी के प्रयास : भारत में स्वच्छता	रोहित मौर्य	24
11.	तुलसी की पत्तियों को ..... दूर होगा माइग्रेन	साभार नवभारत टाइम्स	27
12.	गाँधी एवं स्वच्छता शिक्षा	संकलन	28
13.	महात्मा गाँधी : भारत में स्वच्छता और सफाई के अगुवाकार	संकलन	33
14.	महात्मा गाँधी का जीवन एवं कार्यों की चित्र प्रदर्शनी	साभार	37
15.	बापू की दृष्टि में मातृ–शक्ति	संकलन	41
16.	"गाँधी न्यूरॉन्स फायरिंग" शांति और विकास	संकलन	44
17.	गाँधी के ट्रस्टीशिप के सि(ांत की सामाजिक जिम्मेदारी	संकलन	46
18.	हिंसा और आतंकवाद	संकलन	49
19.	गांधी जी को सुभाष जी का पत्र	संकलन	50
20.	बापू और क्रांतिकारी	संकलन	52
21.	गाँधी और चीनी युवा	संकलन	53
22.	दीनबन्धु सी.एफ.एंड्रयूज	संकलन	55
23.	जब गाँधीजी ने सूट–बूट छोड़ धोती अपनाई	रूचिरा गुप्ता	57
24.	गाँधी जी के चरखे के इन चमत्कारी रूपों पर	संकलन	60
25.	बापू के साथ कुछ पल	संकलन	63
26.	महात्मा गाँधी का साक्षात्कार	संकलन	64
27.	महात्मा गाँधी पर क्विज	संकलन	65

आप भी लिखें

सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख, सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा सस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, काव्य–गीत, कथा–कहानी आदि विषयों पर सामग्री प्रकाशित करना हमारा उद्देश्य हैं। अस्तु आप से प्रार्थना है कि हमारी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपना आलेख भेजकर हमारा सहयोग करने का कष्ट करें। प्रत्येक अंक में प्रकाशित आलेखों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित करें। पुनश्च, जिन बन्धुओं की वार्षिक सदस्यता शुल्क देय हो गये हैं तथा जो आजीवन ग्राहक बनना चाहते हैं उन सभी से प्रार्थना है कि अपेक्षित शुल्क भेज कर हमें अनुगृहीत करें।

हमारा पता है–

E-mail : sewasamwad@gmail.com / sevasamvad@outlook.com

सेवा संवाद

सी-91 निराला नगर, लखनऊ - 226020 उत्तर प्रदेश

मो0 : 9450020514, 9454049918

अपनी बात

स्वस्थ व्यक्ति कौन है? यह एक सामान्य धारणा है कि यदि व्यक्ति शरीर से बीमार नहीं है तो वह स्वस्थ है परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है जो व्यक्ति तन से मन से सामाजिक रूप से तथा आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ्य है वही व्यक्ति स्वस्थ है केवल बीमारी का नहीं होना ही अच्छे स्वास्थ्य का लक्षण नहीं है। चिकित्सक स्वस्थ रहने में हमारी सहायता करता है। स्वस्थ रहना तो स्वयं अपने ऊपर निर्भर करता है। स्वस्थ रहने के लिए परिवार, समाज, राष्ट्र, पर्यावरण, सामाजिक समरसता, मन की शान्ति, साधनों की उपलब्धता आदि इन सबका बहुत बड़ा योगदान रहता है। शरीर स्थूल है और आत्मा सूक्ष्म। शरीर के बिना जीवन सम्भव नहीं है और आत्मा के बिना शरीर निष्प्राण है। मन पर नियन्त्रण घटने से अशान्ति, उच्च रक्त–चाप, मधुमेह, दमा, कैंसर आदि रोगों की संख्या में वृद्धि होती है तन, मन और धन तीनों स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। मन को मारना नहीं अपितु मन पर नियन्त्रण करना –**''रूखा सूखा खाइ कै ठण्डा पानी पीव। देखि पराई चूपड़ी मत ललचावै जीव''** यही स्वास्थ्य का मूल मंत्र है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र ये तीन ऐसे तत्व हैं जो एक दूसरे के पूरक हैं। व्यक्ति और समाज दोनों स्वस्थ होने पर स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण हो सकता है अस्तु मन को स्वस्थ रखने के लिए हम परोपकारी मनःस्थिति रखें। मन स्वस्थ्य रहने पर तन स्वस्थ हो ही जायेगा तथा धन भी आयेगा।

तन के महत्व को दर्शाते हुए **'शरीर माद्यं खलु धर्म साधनम्'** कहा गया है अस्तु तन को स्वस्थ रखने के लिए अधोलिखित तथ्यों पर ध्यान देना सभी के लिए आवश्यक है 1–व्यायाम 2–योग एवं प्राणायाम 3–प्रकृति से निकटता 4–व्यक्तिगत स्वच्छता 5–शुद्ध पेय जल 6– सन्तुलित एवं पौष्टिक आहार 7–विश्राम 8–निद्रा 9–पर्यावरण पर विशेष ध्यान एवं 10–नियमित स्वास्थ्य परीक्षण **स्वच्छता** – सफाई पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी बहुत बल देते रहे इसके साथ ही शरीर–श्रम को भी वे स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए परम आवश्यक मानते रहे। आज शारीरिक श्रम से दूर रह कर बहुत प्रकार के रोगों से ग्रसित मानव स्वस्थ रहने के लिए शारीरिक श्रम की महत्ता को समझ गया है। यह बात कुछ और है कि व्यावहारिक धरातल पर अभी हम श्रम से बचने की कोशिश करते हैं। महात्मा गाँधी जी का बहुआयामी व्यक्तित्व, उनका जीवन दर्शन, उनके अहिंसा के पांच स्तम्भ : 1–सम्मान, 2–समझ, 3–स्वीकृति, 4–प्रशंसा और 5–करुणा मानव जीवन के अस्तित्व के अत्यन्त उपयोगी हैं। ये सरल आदतें सदगुण स्वरूप हैं। हम इनका पालन पोषण करते हुए दुनियाँ में बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं। इन आदतों को अपनाकर हम न केवल खुद खुश रह सकते हैं बल्कि दूसरों को खुश रखने में योगदान कर सकते हैं। इसी कड़ी में **बहुजन हिताय बहुजन सुखाय** की भावना से वर्तमान समय में यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्वस्थ रहने के लिये स्वच्छता को एक अभियान के रूप में चलाया है। शारीरिक, मानसिक, धार्मिक, अध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी रूपों में शुद्धता–स्वच्छता को अपनाकर हम स्वस्थ रहने का शुभ संकल्प लेकर सुखी रहें। आनन्दमय जीवन व्यतीत करें इसी आशा–आकांक्षा के साथ यह अंक आप को समर्पित है।

शिव

बापू का प्रिय भजन

वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड परायी जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तो ये, मन अभिमान न आणे रे।।
वैष्णव जन तो तेने कहिये.....

सकळ लोक मां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चळ राखे, धन धन जननी तेनी रे।।
वैष्णव जन तो तेने कहिये.....

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे।।
वैष्णव जन तो तेने कहिये.....

मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ वैराग्य जेना मनमां रे।
रामनाम शुं ताळी रे लागी, सकल तीरथ तेना तनमां रे।।
वैष्णव जन तो तेने कहिये.....

वणलोभी ने कपटरहित छे, कामक्रोध निवार्या रे।
भणे नरसैयो तेनुं दरसन करतां, कुळ एकोतेर तार्या रे।।
वैष्णव जन तो तेने कहिये.....

निःशुल्क चिकित्सा एवं स्वास्थ्य शिविर तथा फल वितरण

सेवा संवाद की विशेष कवरेज के अनुसार अन्त्योदय हेल्थ मिशन एवं किंगजार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में विशाल निःशुल्क नेत्र एवं चिकित्सा शिविर का आयोजन–ग्राम–रसूलपुर आशिक अली में ब्लाक गोसाइंगंज–जिला–लखनऊ में सम्पन्न हुआ। जिसमें 2014 मरीजों का निःशुल्क चेकअप विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा किया गया एवं सभी मरीजों को निःशुल्क दवा तथा चश्मे वितरित किये गये। जिसमें से नेत्र के 825 मरीज, दन्त–222, स्त्रीरोग–172, बालरोग–125, मेडिसिन–670 जिसमें–466 मरीजों को निःशुल्क चश्मे वितरित किये गये जिनकी कीमत रु. 137,470/– एवं रु. 143,476/– रुपये की दवा एवं रु. 62,650/– के फल वितरित किये गये शुगर के 160 मरीजों की जाँच एवं दवा बी.पी. के 378 मरीजों की जांच एवं दवा का वितरण किया गया।

विशेष रूप से भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्रीमान स्वतंत्रदेव सिंह जी, श्री अतुल गर्ग जी, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा राज्य मंत्री, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 नरेन्द्र अग्रवाल किंगजार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 डॉ0 मदनलाल ब्रहम् भट्ट, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक–प्रोफेसर डॉ0 सत्यनारायण शंखवार जी व 33 चिकित्सकों की टीम, 12 पैरामेडिकल स्टाफ व नेत्र कुम्भ चिकित्सालय के 7 कर्मचारी व स्थानीय कार्यकर्ता उपस्थित थे।

के और लोगों के साथ मिलकर के, सभी वर्गों के साथ मिलकर के, सभी आयु के लोगों के साथ मिलकर के गाँव हो, शहर हो, पुरुष हो, स्त्री हो, सब के साथ मिलकर के, समाज के लिये, क्या करें एक व्यक्ति के नाते, मैं उन प्रयासों में क्या जोड़ूं। मेरी तरफ से value addition क्या हो? और सामूहिकता की अपनी एक ताकत होती है। इस पूरे, गाँधी 150, के कार्यक्रमों में, सामूहिकता भी हो, और सेवा भी हो। क्यों ना हम मिलकर के पूरा मोहल्ला निकल पड़े। अगर हमारी फुटबाल की टीम है, तो फुटबाल की टीम, फुटबाल तो खेलेंगे ही लेकिन एक–आध गाँधी के आदर्शों के अनुरूप सेवा का काम भी करेंगे। हमारे ladies club हैं। आधुनिक युग के ladies club के जो काम होते हैं वो करते रहेंगे, लेकिन, ladies club की सभी सखियाँ मिलकर के कोई ना कोई एक सेवा कार्य साथ मिलकर के करेंगे। बहुत कुछ कर सकते हैं। किताबें इकट्ठी करें पुरानी, गरीबों को बांटें, ज्ञान का प्रसार करें, और मैं मानता हूँ शायद 130 करोड़ देशवासियों के पास, 130 करोड़ कल्पनायें हैं, 130 करोड़ उपक्रम हो सकते हैं। कोई सीमा नहीं है जो मन में आये – बस सदइच्छा हो, सदहेतु हो, सदभाव हो और पूर्ण समर्पण भाव की सेवा हो और वो भी स्वांत: सुखाय: – एक अनन्य आनंद की अनुभूति के लिये हो।

मेरे प्यारे देशवासियों, कुछ महीने पहले, मैं, गुजरात में दांडी गया था। आजादी के आंदोलन में 'नमक सत्याग्रह', दांडी, एक बहुत ही बड़ा महत्वपूर्ण turning point है। दांडी में, मैंने, महात्मा गाँधी को समर्पित अति–आधुनिक एक museum का उद्घाटन किया था। मेरा, आपसे जरूर आग्रह है, कि, आप भी, आने वाले समय में महात्मा गाँधी से जुड़ी कोई न कोई एक जगह की यात्रा जरूर करें। यह, कोई भी स्थान हो सकता है जैसे पोरबंदर हो, साबरमती आश्रम हो, चंपारण हो, वर्धा का आश्रम हो और दिल्ली में महात्मा गाँधी से जुड़े हुए स्थान हों, आप जब, ऐसी जगहों पर जाएँ, तो, अपनी तस्वीरों Social Media पर साझा जरुर करें, ताकि, अन्य लोग भी उससे प्रेरित हों और उसके साथ अपनी भावनाओं को व्यक्त करने वाले दो–चार वाक्य भी लिखिए। आपके मन के भीतर से उठे हुए भाव, किसी भी बड़ी साहित्य रचना से, ज्यादा ताकतवर होंगे और हो सकता है, आज के समय में, आपकी नजर में, आपकी कलम से लिखे हुए गाँधी का रूप, शायद ये अधिक भी लगे। आने वाले समय में बहुत सारे कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं, प्रदर्शनियों की योजना भी बनाई गई है। लेकिन इस संदर्भ में एक बात बहुत रोचक है जो मैं आपसे साझा करना चाहता हूँ। Venice Biennaleuke का एक बहुत प्रसिद्ध Art Show है। जहाँ दुनिया भर के कलाकार जुटते हैं। इस बार Venice Biennaleds India Pavilion में गाँधी जी की यादों से जुड़ी बहुत ही Interesting प्रदर्शनी लगाई गई। इसमें हरिपुरा Panels विशेष रूप से दिलचस्प थे। आपको याद होगा कि गुजरात के हरीपुरा में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था जहाँ पर सुभाष चन्द्र बोस के President elect होने की घटना इतिहास में दर्ज है। इन art panels का एक बहुत ही खूबसूरत अतीत है।

कांग्रेस के हरिपुरा session से पहले 1937–38 में महात्मा गाँधी ने शांति निकेतन कला भवन के तत्कालीन principal नन्दलाल बोस को आमन्त्रित किया था। गाँधी जी चाहते थे कि वे भारत में रहने वाले लोगों की जीवनशैली को कला के माध्यम से दिखाए और उनकी इस art work का प्रदर्शन अधिवेशन के दौरान हो। ये वही नन्द लाल बोस है जिनका art work हमारे संविधान की शोभा बढ़ाता है। संविधान को एक नई पहचान देता है।

अनुपम मिश्र

गाँधी-मार्ग का अभिभावक

❑ मनोज कुमार झा

रचनात्मक संस्थाओं के सम्पर्क में अस्सी के दशक से हूँ। मेरे लिये अच्छी बात यह रही कि इस दौरान जो भी सम्पर्क बना या जो भी काम किया वह वैसा ही काम था जिसे हम गाँधीवादी दृष्टि से देखते हैं। हालांकि गाँधीवाद शब्द इस्तेमाल करना खुद मुझे अच्छा नहीं लग रहा क्योंकि यह कभी राष्ट्रपिता को भी पसन्द नहीं आया था।

खैर! यह तो रही बातों को थोड़ी गहराई से समझने की बात। अपनी बात को आगे बढ़ाऊँ तो मेरे जीवन में जो सबसे बड़ी शख्सियत आये जिनके साथ मिलकर काम करने का अवसर मिला– वे थे प्रेमभाई। प्रेमभाई के साथ ही पहली बार दिल्ली आया। और इस तरह कह सकते हैं कि दिल्ली में अनुपम भाई से मुझे प्रेमभाई ने ही मिलाया।

अनुपम भाई पहली ही भेंट में मन पर गहरी छाप छोड़ गए। साहित्य की बहुत ज्यादा समझ नहीं पर यह समझता था कि अनुपम भाई जो लिखते हैं वह वाकई हर लिहाज से अनुपम ही होता है। सोचता था इनके साथ मिलकर कभी काम करने का मौका मिले तो जैसे एक पिपासु छात्र को श्रेष्ठ शिक्षक मिल जाएगा।

आखिरकार यह तमन्ना पूरी तो हुई लेकिन तकरीबन एक दशक के इन्तजार के बाद। मुझे याद है कि गाँधी–मार्ग में मैं जब आया तो वे इस पत्रिका के कार्यकारी सम्पादक थे। उन्होंने 'आज भी खरे हैं तालाब' के प्रकाशन की व्यस्तता के कारण सम्पादन का काम छोड़ दिया था। मुझे लगा ईश्वर ने एक बड़ा अवसर तो दिया लेकिन कुछ कमी रह गई।

एक दिन बहुत उदास होकर उनके पास पहुँचा और कहा कि अब 'गाँधी–मार्ग' का सम्पादन कैसे होगा। उन्होंने अपनी विनम्र और स्मित मुस्कान के साथ कहा, 'मैं प्रतिष्ठान छोड़कर नहीं जा रहा हूँ भाई। सम्पादन की जिम्मेवारी छोड़ी है, गाँधी–मार्ग नहीं छोड़ा है। वैसे भी गाँधी–मार्ग हम सबके चलने के लिए है, न कि बैठकर कोई इसकी चाकरी करे, जैसे सरकारी राजमार्गों और पुल–पुलियों पर नाका बिठाकर टोल वसूलने वाले करते हैं। नए सम्पादक आएँगे वे और अच्छे से गाँधी–मार्ग निकालेंगे। मैं तो मदद में रहूँगा ही।' थोड़े दिन ऐसा ही चला। पर बाद में बुरा यह हुआ कि कुछ वजहों से गाँधी–मार्ग का प्रकाशन बन्द हो गया।

सितम्बर 2006 में गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान की संचालन समिति ने एक बार फिर उन्हें गाँधी–मार्ग की सम्पूर्ण जिम्मेवारी सौंपते हुए प्रकाशित करने का आग्रह किया उन्होंने दो दिन का समय माँगा। इन दो दिनों में उनसे कई दौर की बात हुई। उन्होंने गाँधी–मार्ग के प्रकाशन के आर्थिक सामाजिक सरोकार से मुझे अवगत कराया। प्रकाशन के हर छोटे–छोटे पहलू बताए। कहा कि वर्तनी का ध्यान पहले कदम से होना चाहिए। मुझे उन्होंने पत्रिका को होने वाली तरह–तरह की समस्या से भी अवगत कराया।

मेरे लिये यह सारा अनुभव बोधिवृक्ष के नीचे बैठकर सुनने और समझने का था। वे जो कह रहे थे वह तो गम्भीरता से मन में बैठ ही रहा था कहने और सिखाने का उनका तरीका कायल करता जा रहा था। इसी दौरान उनकी कही एक बात जो उनके न रहने पर सबसे ज्यादा याद आ रही है– वह है भाषा को लेकर उनकी हिदायत। उन्होंने कहा, 'मनोज, यह भाषा का गाँधी–मार्ग है।'

खासतौर पर हम जैसे लोगों को यह हमेशा याद रखना होगा। हिंसा भाषा की भी होती है। भाषा भ्रष्ट भी होती है। दुर्भाग्य से पूरी हिन्दी पत्रकारिता ने जैसे भाषा का अनुशासन ही छोड़ दिया है। हमारे लिये जरूरी है कि हम सुन्दर, संवेदनशील और अहिंसक भाषाशैली को अपनाएँ। खुद गाँधीजी ने ऐसा किया। 'गाँधी–मार्ग' की भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसमें न तो बेवजह का जोश दिखे और न

ऐसा कि यहाँ काम करने वाले सबके वे हमेशा प्रिय बने रहे। यहां तक कि बहुत ना–ना करने के बाद जब वे कुछ समय के लिये यहाँ कार्यकारी सचिव और बाद में सचिव पद की जवाबदेही सम्भाली तो न उन्होंने अपने बैठने की व्यवस्था बदली और न ही सहयोगियों के साथ सलूक। पता नहीं कैसे वे अपने व्यस्त दिनचर्या में भी हर एक के हर छोटी–बड़ी समस्या में स्नेह से सहयोग करते थे। सबका ध्यान रखते।

एक जीवन कैसे व्यवहार से लेकर अक्षर तक प्रेरक और अनुपम बनता है, अनुपम भाई इसके मिसाल थे। कभी कोई बात लिखते या बोलते हुए उनकी नसीहत जैसे मार्ग दिखाती है कि मर्म की जगह बेवजह का शब्दाडंबर क्यों? बात कहनी है तो सरलता से कहो, लेखन और कथन में इतना बनावटीपन क्यों? यह भी कि गाँधी का नाम लेने से न तो कोई बात बड़ी होती है और न ही कोई व्यक्ति। जीवन तो वैसे ही लोगों का अनुपम होगा, जो अनुपम भाई की तरह पानीदार होंगे।

पानी पर लिखने–बोलने वाला, पानी के संकट को लेकर सतर्क करने वाला वह शख्स आज भले हमारे बीच न हो पर हम सबको जैसे समझा रहा हो कि सीखना है तो मुझसे क्या, पानी से सीखो। सीखो उन पुरखों से जिन्होंने पानी के साथ कभी मनमानी नहीं की। भाषा भी तो रोड़े या पत्थर की तरह नहीं बल्कि पानी की तरह होनी चाहिए। पर पानीदार भाषा का झाँसा कोई दे भी सकता है इसलिये ज्यादा जरूरी है कि भाषा ही नहीं भाषी का जीवन भी पानी जैसा हो।

अनुपम भाई ने पानी पर बहुत लिखा, पर वह पानी के साथ धुलेगा नहीं बल्कि रचना और समाज से जुड़े लोगों को बार–बार यह याद दिलाएगा कि अगर कबीर के साथ उसका बेदाग चादर था तो हमारे समय को यह आगे बढ़कर कहना होगा कि हमारे साथ पानी है, पानी जैसी वाणी है और इन सबसे ज्यादा पानी का वह समन्वयी गुण है जो मेल कराता है, खल और खेल नहीं। यही तो वह गाँधी–मार्ग है जिस पर सालों अँगुली पकड़कर मुझ जैसे न जाने कितने मनोज को उन्होंने चलना सिखाया।

❑

क्रियात्मक राजनीति

उन्हें क्रियात्मक राजनीति से अलग रहना ही चाहिये। यह देश के इकतरफा विकास की निशानी है कि सब दलों ने विद्यार्थी–जगत् का अपने–अपने मतलब से उपयोग किया है। यह शायद उस सूरत में अनिवार्य था जब शिक्षा का मकसद ऐसे गुलामों की नस्ल पैदा करना था जो अपनी दासता से चिपटे रहना चाहें। आशा है वह काम खत्म हो गया। विद्यार्थियों का पहला काम है विचार करके यह मालूम करना कि स्वतंत्र राष्ट्र के बच्चों को कैसी शिक्षा मिलनी चाहिये। आजकल की शिक्षा तो प्रत्यक्ष ही वैसी शिक्षा नहीं है। मुझे इस प्रश्न की चर्चा नहीं करनी है कि वह शिक्षा कैसी हो। इतनी ही बात है कि उन्हें यह विश्वास करके अपने को धोखा नहीं देना चाहिये कि यह काम विश्वविद्यालय की प्रबन्धकारिणी के बुजुर्गों का ही है। उन्हें विचार करने की शक्ति को उत्तेजना देना चाहये। मेरा यह जरा भी सुझाव नहीं है कि विद्यार्थी हड़तालें वगैरह करके जबरदस्ती ऐसी स्थिति ला सकते हैं। उन्हें रचनात्मक और ज्ञान–पूर्ण आलोचना करके लोकमत पैदा करना होगा। प्रबन्ध–सभा के सदस्य पुरानी विचारधारा में पले होने के कारण धीरे–धीरे चलते हैं पर सही जागृति की जाय तो उन पर जरूर असर हो सकता है।

अनुसार उसमें तब्दीली ला सकता है। इस अर्थ में मनुष्य अपनी नियति रच सकता है। उसे इसकी छूट है कि वह अपनी स्वतंत्रता का यथेच्छ उपयोग करे कि मनुष्य इसलिए मनुष्य है कि उसमें विवेक है पर उनका विवेक कोरा तर्क रैशनल बात नहीं है। मनुष्य की अपनी अंतर्ध्वनि भी है, अंतरात्मा भी है जो सब में है इसलिए साझी है पर सबकी अलग–अगल है। इसलिए बिना अंधानुकरण किए खुद अपने ढंग से सोचना जरूरी हो जाता है।

मनुष्य की स्वायत्तता और स्वतंत्रता एकांगी नहीं होती। आज हमें चुनने की खूब स्वतंत्रता है। एक समय थ जब परंपरागत समाज हमें पूर्वनिश्चित दायित्व में बांधता था और दूसरों की आशाओं–अपेक्षाओं के अनुरूप बनने के लिए कहता था। पर आज का आधुनिक मन इन सब में नियंत्रण की बू देखता था और इसलिए उसे छोड़ने लगा, रिजेक्ट करने लगा। पर स्वतंत्रता मिली क्या? आज एक नया और भयानक दबाव आया है। वह दबाव है बाजार के बढ़ते वर्चस्व का जो हमारे काम–धाम, ज्ञान–विज्ञान, नाते–रिश्ते, और जीवन शैली यानी सब कुछ तय करने लगा है। वह झूठी दिलासा जरूर दिलाता है की तुरत–फुरत सब मिल जाएगा और अबाध सुख की गांरटी ऊपर से है नियंत्रण के उपाय–औजार आज और तेज और नुकीले हो गए हैं। ऐसे में गांधी जी बेहद प्रासंगिक हो उठते हैं और सोचने को मजबूर करते हैं कि अपने स्वभाव को फिर से पहचानें, शायद कोई रास्ता निकल आए।

राष्ट्रीय सेवा विद्यार्थियों को संदेश : गाँधी जी के विचार

आजकल अधिकांश विद्यार्थी राष्ट्रीय सेवा में दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं। उनमें बहुत से ऐसी आदतें सीख रहे हैं, जिन्हें वे पश्चिम की फैशन समझते हैं और अधिकाधिक विद्यार्थी शराबखोरी वगैरह की बुरी आदतों के शिकार हो रहे रहैं। कार्यदक्षता बहुत कम है और स्वतंत्र विचार करने की इच्छा भी थोड़ी ही है। हम इन सब समस्याओं को हल करना चाहते हैं और युवकों में चरित्र, अनुशासन और कार्यदक्षता पैदा करना चाहते हैं। आपके ख्याल में हम यह कैसे कर सकते हैं?

इन सब बातों का सम्बन्ध मौजूदा बीमारी से है। जब शांत वातावरण पैदा हो जायेगा और विद्यार्थी आन्दोलनकारी न रहकर गंभीरतापूर्वक अध्ययन में लग जायेंगे तब यह बीमारी मिट जायेगी।

विद्यार्थी–जीवन की उपमा संन्यासी

"जहाँ तक मैं जानता हूँ हिन्दू धर्म तो यह मानता है कि जब तक उसकी पढ़ाई खत्म न हो जाय, तब तक विद्यार्थी का जीवन संन्यासी के जीवन जैसा होना चाहिये। उसे अत्यन्त कठोर अनुशासन में रहना चाहिये। उसका आचरण आदर्श आत्म–संयम का होना चाहिये। यदि वे उस आदर्श पर कुछ भी चलते होते, तो प्रार्थना–सभा में उन्होंने जो कुछ किया वह न करते।"

जीवन से ठीक ही दी गई है। विद्यार्थी को सादा जीवन और उच्च विचारों की मूर्ति बनना ही चाहिये। उसे अनुशासन का अवतार होना चाहिये। उसे अपने अध्ययन से ही सुख मिलना चाहिये। जब अध्ययन विद्यार्थियों के लिये जबरदस्ती लादा गया बोझ नहीं रहता, तब उससे अवश्य सच्चा सुख मिलता है। विद्यार्थी तेजी से अधिकाधिक ज्ञानप्राप्ति करता चला जाय, इससे अधिक सुख और क्या हो सकता है।

नाम से जाना जाता है। नमक आंदोलन के कारण ब्रिटिश हुकूमत विचलित हो गई थी और उन्होंने इस आंदोलन में सम्मिलित होने वाले लोगों में से लगभग 80000 लोगों को जेल भेज दिया था।

भारत छोड़ो आंदोलन

महात्मा गाँधी जी ने ब्रिटिश हुकूमत को भारत से जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए 8 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ किया गया। इस आंदोलन की नींव उसी दिन पक्की हो गई थी जिस दिन गाँधी जी ने नमक आंदोलन सफलतापूर्वक किया था। उन्हें विश्वास हो गया था कि अंग्रेजों को अगर भारत से बाहर कर देना है तो उसके लिए अहिंसा का रास्ता ही सबसे उत्तम रास्ता है। महात्मा गाँधी ने यह आंदोलन कब छेड़ा जब द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था और ब्रिटिश हुकूमत अन्य देशों के साथ युद्ध लड़ने में लगी हुई थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण अंग्रेजों की हालत दिन प्रति दिन खराब होती जा रही थी उन्होंने भारतीय लोगों को लिखते विश्वयुद्ध में शामिल करने का निर्णय लिया। लेकिन भारतीय लोगों ने उन्हें नित्य विश्वयुद्ध से अलग रखने पर जोर दिया। बाद में ब्रिटिश हुकूमत के वादा करने पर भारतीय लोगों ने द्वितीय विश्वयुद्ध में अंग्रेजों का साथ दिया। ब्रिटिश हुकूमत ने वादा किया था कि वे द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत को स्वतंत्र कर देंगे। यह सब कुछ भारत छोड़ो आंदोलन के प्रभाव के कारण ही हो पाया और वर्ष 1947 में भारत को ब्रिटिश हुकूमत से आजादी मिल गई।

महात्मा गाँधी का भारत छोड़ो आंदोलन पूर्ण रूप से सफल रहा। इसकी सफलता का श्रेय सभी देशवासियों को भी जाता है क्योंकि उन्हीं की एकजुटता के कारण इस आंदोलन में किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं हुई और अंत में सफलता प्राप्त हुई। बहुत ही सरल स्वभाव के व्यक्ति थे वे हमेशा सत्य और अहिंसा में विश्वास रखते थे। उन्होंने हमेशा गरीब लोगों का साथ दिया था। जब देश में जाति, धर्म और अमीर–गरीब के नाम पर लोगों को बांटा जा रहा था तब गाँधी जी ने ही गरीबों को साथ लेते हुए उन्हें "हरिजन" का नाम लिया और इसका मतलब भगवान के लोग होता है।

उनके जीवन पर भगवान बुद्ध के विचारों का बहुत प्रभाव था इसी कारण उन्होंने अहिंसा का रास्ता बनाया था। उनका पूरा जीवन संघर्षों से भरा हुआ था लेकिन अंत में उन्हें सफलता प्राप्त हुई थी। उन्होंने भारत देश के लिए जो किया है उसके लिए धन्यवाद शब्द बहुत कम है। हमें उनके विचारों से सीख लेनी चाहिए आज लोग एक दूसरे से छोटी छोटी बात पर झगड़ा करने लगते हैं और हर एक छोटी सी बात पर लाठी और बंदूके चलाने लगते हैं। गाँधी जी ने कहा था कि जो लोग हिंसा करते हैं वे हमेशा नफरत और गुस्सा दिलाने की कोशिश करते हैं। गाँधीजी के अनुसार अगर शत्रु पर विजय प्राप्त करनी है तो हम अहिंसा का मार्ग भी अपना सकते हैं। जिसको अपनाकर गाँधी जी ने हमें ब्रिटिश हुकूमत से आजादी दिलवाई थी।

चिंता से काम बिगड़ते हैं, यह कुदरत का कानून है। चिंतामुक्त रहने से काम अच्छी तरह से हो पाता है। संपन्न और समाज में महत्वपूर्ण व्यक्ति अत्याधिक चिंता और तनाव से ग्रस्त रहते हैं। मजदूरों को उतनी चिंता नहीं होती, वे आराम से सोते हैं जबकि उनके मालिकों को नींद की गोलियाँ लेनी पड़ती हैं। जो चिंता करते हैं, उनकी धन–संपति भी चली जाती है।
चिंता क्या है? सोचने में नुकसान नहीं है लेकिन जब सोचने का सिलसिला हद से आगे बढ़ता है तब चिंता शुरू हो जाती है। जब ऐसा होने लगे तो सोचना बंद कर दें। यदि यह पता चल जाए कि वास्तव में "कर्ता कौन" है तो चिंता बंद हो जाएगी।

श्याम बाबू ओझा

गाँधीजी यह स्थापित करना चाहते थे कि भारतीयों को व्यापार का लाइसेंस इसलिए नहीं दिया जा रहा था क्योंकि वह अंग्रेज व्यापारियों को कड़ी टक्कर दे रहे थे। दूसरे, उन्होंने यह तर्क भी दिया कि भारतीय व्यापारी और अन्य लोग सफाई रखने के आदी होते हैं। उन्होंने म्यूनिसिपल डॉक्टर वियेले का उदाहरण दिया जिन्होंने भारतीयों को सफाई के प्रति सचेत और जागरूक बताया था। डॉक्टर वियेले ने भारतीयों को धूल और लापरवाही से होने वाली बीमारियों से मुक्त बताया था। भारतीय व्यापारियों को व्यापार का लाइसेंस देने से इंकार क्यों किया जा रहा था उस संबंध में भी याचिका में दिए गए तर्क में बताया था कि यह व्यापारिक जलन की वजह से किया गया है। भारतीय स्वभाव से मितव्ययी और शांत होते हैं। भारतीय व्यापारी जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं की कीमत कम रखते थे और उन्हें सस्ते दाम में बेचते थे जिससे श्वेत व्यापारियों के साथ वह भी प्रतिस्पर्धा में आ गए थे।

भारत में स्वच्छता परिदृश्य अभी भी निराशाजनक है। हमने गाँधी को एक बार फिर विफल कर दिया है। गाँधीजी ने समाज शास्त्र को समझा और स्वच्छता के महत्व को समझा। पारंपरिक तौर पर सदियों से सफाई के काम में लगे लोगों को गरिमा प्रदान करने की कोशिश की। आजादी के बाद से हमने उनके अभियान को योजनाओं में बदल दिया। योजना को लक्ष्यों, ढांचों और संख्याओं तक सीमित कर दिया गया। हमने मौलिक ढांचे और प्रणाली से 'तंत्र' पर तो ध्यान दिया और उसे मजबूत भी किया लेकिन हम 'तत्व' को भूल गए जो व्यक्ति में मूल्य स्थापित करता है। गाँधीजी भारतीय लोगों की साफ–सफाई कम रखने की आदतों से भी परिचित थे। इसलिए उन्होंने 1914 तक अपने 20 वर्षों के प्रवास के दौरान साफ–सफाई रखने पर विशेष बल दिया। गाँधीजी इस बात को समझते थे कि किसी भी इलाके में बहुत अधिक भीड़भाड़ गंदगी की एक मुख्य वजह होती है। दक्षिण अफ्रीका के कुछ शहरों में विशेष इलाकों में भारतीय समुदाय के लोगों को पर्याप्त जगह और ढांचागत सुविधाएं नहीं मुहैया कराई गई थी। गाँधीजी मानते थे कि उचित स्थान, मूलभूत और ढांचागत सुविधाएं और स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी नगरपालिका की है। गाँधीजी ने इस संबंध में जोहांसबर्ग के चिकित्सा अधिकारी को एक पत्र भी लिखा था। उन्होंने पत्र में लिखा था। 'मैं आपको भारतीयों के रहने वाले इलाकों की स्तब्ध कर देने वाली स्थिति के बारे में लिख रहा हूं। एक कमरे में कई लोग एक साथ इस तरह ठूंस कर रहते हैं कि उनके बारे में बताना भी मुश्किल है। इन इलाकों में सफाई सेवाएं अनियमित हैं और सफाई न रखने के संबंध में बहुत से निवासियों ने मेरे कार्यालय में शिकायत करके बताया है कि अब स्थिति पहले से भी बदतर हो गई है।'

गाँधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा था, 'नगरपालिका की आपराधिक लापारवाही और सफाई के प्रति भारतीय निवासियों की अज्ञानता की वजह से कई इलाकों को पूरी तरह गंदा रखने की साजिश रची गई थी।' एक बार दक्षिण अफ्रीका में काले प्लेग का प्रकोप फैला। सौभाग्य से उसके लिए भारतीय जिम्मेदार नहीं थे। यह जोहांसबर्ग के आस–पास के क्षेत्र में सोने की खादानों वाले इलाके में फैला था। गाँधीजी ने अपनी पूरी शक्ति के साथ, स्वेच्छा से और स्वयं के जीवन को खतरे में डालकर रोगियों की सेवा की। नगर चिकित्सक और अधिकारियों ने गाँधीजी की सेवाओं की बहुत तारीफ की। गाँधी जी चाहते थे कि लोग उस घटना से सबक लें। उन्होंने एक जगह लिखा था 'इस तरह के कठोर नियमों पर निस्संदेह हमें गुस्सा आता है। परंतु हमें इन नियमों का मानना चाहिए क्योंकि इससे हम गलती दोहराएगें नहीं। हमें स्वच्छता और सफाई का मूल्य पता होना चाहिए...गंदगी को हमें अपने बीच से हटाना होगा...क्या स्वच्छता स्वयं ईनाम नहीं है? हाल ही में जो घटना हुई है यह हमारे देशवासियों के लिए एक सबक है।'

महात्मा और संघ

❑ डॉ0 मनमोहन वैद्य
सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

गाँधी और आरएसएस के बीच पारस्परिक सम्मान व्यापक रूप से ज्ञात नहीं है। उन्होंने कहा कि यह स्व–संगठित समूहों को "असंगठित" कहकर महात्मा गाँधी का अपमान था, उन्होंने कहा कि ऐसे समूह स्वराज के बापू के सिद्धांतों पर आधारित हैं।

पोल बिगुल बज चुका है और राजनीतिक नेता अपनी पार्टियों की संस्कृति और परंपरा के अनुसार प्रचार भाषण देने में व्यस्त हैं। इस तरह के एक भाषण में, एक पार्टी के नेता ने घोषणा की कि इस बार का वोट महात्मा गाँधी और नाथूराम गोडसे के बीच का चुनाव होगा। जो लोग गाँधीवादी विचारधारा का पालन करते हैं, वे अपनी बातों पर विशेष ध्यान देते हैं और गोडसे का नाम कभी नहीं लेते हैं। मैंने संघ में गाँधीजी पर ऐसी कई चर्चाओं में भाग लिया है लेकिन गोडसे का जिक्र कभी नहीं सुना। यह वास्तव में विडंबना है कि जिनके कार्य और नीतियां महात्मा के जीवन और विरासत के सीधे विरोध में हैं, जो झूठ और हिंसा पर एक राजनीतिक हथियार के रूप में भरोसा करते हैं, संकीर्ण राजनीतिक लाभ के लिए उनके नाम का उपयोग करना चाहते हैं। संघ के अधिकांश पहलुओं की तरह, जब गाँधीजी के साथ आरएसएस के संबंध की बात आती है, तो लोग अक्सर तथ्यों की अपेक्षित परीक्षा के बिना अनुमान लगा लेते हैं। यहां तक कि तथाकथित विद्वान भी इस विषय के समग्र अध्ययन का प्रयास नहीं करते हैं।

रिकॉर्ड को सीधे सेट करने के लिए, संघ के साथ गाँधी के संबंधों पर उपलब्ध सामग्री की सावधानीपूर्वक जांच की जानी चाहिए। मुस्लिम समुदाय के बीच चरमपंथी और जिहादी तत्वों के प्रति उनके और उनके आत्मसमर्पण से असहमत होने के बावजूद, आरएसएस ने चरखे और सत्याग्रह जैसे सरल माध्यमों से भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए जनता के समर्थन को व्यापक बनाने के उनके प्रयासों की हमेशा प्रशंसा की है और इसे उनकी महानता माना है। यदि कोई ग्राम स्वराज, स्वदेशी, गौ रक्षा और अस्पृश्यता के उन्मूलन जैसे रचनात्मक कार्यक्रमों पर गाँधीजी के आग्रह को समझता है, तो शाश्वत हिंदू विचार के लिए उसकी आत्मीयता और दृढ़ता निर्विवाद है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ0 के बी हेडगेवार 1921 के असहयोग आंदोलन और 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय भागीदार थे। उनकी भागीदारी के लिए, उन्होंने दो कठोर कारावास की सजा काटी।

जब 18 मार्च, 1922 को महात्मा को छह साल कैद की सजा सुनाई गई थी, तब हर महीने की 18 वीं तारीख को गाँधी दिवस के रूप में मनाया जाता था। जब भी गाँधीजी जेल में थे, उनके कुछ स्वयंभू अनुयायी देशभक्ति के नाम पर अपना हित साध रहे थे। अक्टूबर 1922 में गाँधी दिवस पर अपने भाषण में हेडगेवार ने इस विसंगति को झंडी दिखा दी। "आज का दिन बहुत ही शुभ है। यह महात्माजी जैसे महान आत्मा के जीवन में पाए जाने वाले मूल्यों और गुणों को सुनने और नम करने का दिन है। जो लोग उसके अनुयायी कहलाने में गर्व महसूस करते हैं, उन पर इन गुणों का पालन करने की अतिरिक्त जिम्मेदारी है। 1934 में, जब गाँधीजी जमनालाल बजाज के निवास पर रहते थे, उन्होंने पास में आयोजित किए जा रहे आरएसएस के एक शिविर में भाग लिया। वहां अपनी बातचीत के दौरान, उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि शिविर में अनुसूचित जातियों के स्वयंसेवक शामिल थे और सभी लोग भाईचारे के साथ रहते थे। जब गाँधीजी उस समय की एंक स्वीपर कॉलोनी में रह रहे थे, आजादी के बाद, उनके निवास के सामने एक सुबह का आयोजन

चरखे का सन्देश

मैं हर अवसर पर, हर घड़ी, चरखे का सन्देश सुनाने में नहीं थकता। क्योंकि यह इतना निर्दोष होते हुये भी भलाई की बहुत बड़ी शक्ति रखता है। वह स्वादिष्ट भले न हो, परन्तु किसी स्वास्थ्यप्रद भोजन में तन्दुरूस्ती को भारी नुकसान पहुंचाने वाले मसालेदार भोजन का जायका कभी नहीं होता। और इसीलिये गीता ने एक स्मरणीय श्लोक में सभी विचारशील लोगों से ऐसे पदार्थ ग्रहण करने को कहा है, जिनका स्वाद शुरू में कड़ुआ होता है, परन्तु जो अन्त में अमरत्व प्रदान करने वाले होते हैं। आज ऐसी चीज यह चरखा और उससे पैदा हुई वस्तु है। कातने से बड़ा और कोई यज्ञ नहीं है। यह दुःखित आत्मा को शांति प्रदान करता है, विद्यार्थियों के बेचैन मन को तसल्ली देता है। और उनके जीवन को आध्यात्मिक ढूंढ़ने वाले आज के व्यावहारिक युग में भारत के लिये इससे अच्छा और नुस्खा नहीं है। गायत्री में

खुशी से देश के सामने रख सकता हूँ, लेकिन उसके बारे में मैं तात्कालिक परिणाम का वचन नहीं दे सकता। लेकिन चरखा ऐसी चीज है। उसे आप ईश्वर का नाम लेकर ग्रहण कर सकते हैं और तात्कालिक फल की आशा रख सकते हैं। एक अंग्रेज मित्र ने लिखा कि उनकी अंग्रेजी बुद्धि उनसे कहती है कि कातना एक अच्छा शौक है। मैंने उनसे कहा, "आपके लिये वह शौक की चीज हो सकता है, पर हमारे लिये वह कल्पवृक्ष है।

समाचार

सूर्योदय के सवा दो घंटे के अंदर करें नाश्ता : प्रो भट्ट

भारत में लोगों की औसत आयु तो काफी बढ़ गई है, लेकिन जीवनशैली की अनियमितता से लोग स्वस्थ जीवन नहीं जी पा रहे हैं। हवा, पानी, सूर्य की रोशनी जैसे प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग न कर पाने से यह समस्या आ रही है। यह कहना है केजीएमयू कुलपति प्रो. एम.एल.बी. भट्ट का। प्रो. भट्ट आरोग्य मित्र प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर संबोधित कर रहे थे।

आरोग्य भारती अवध प्रांत द्वारा आयोजित दो दिवसीय शिविर के समापन अवसर पर प्रो. भट्ट ने कहा कि स्वस्थ वही है, जिसमें कार्य के प्रति उत्साह है। स्वस्थ जीवन के सूत्र बताते हुए उन्होंने कहा कि रात 10 से सुबह चार बजे तक सोना चाहिए। शारीरिक श्रम करना चाहिए और रात को चाय, कॉफी, कोल्ड डिंक्स वगैरह का सेवन न करें। उन्होंने कहा कि सूर्योदय से सवा दो घंटे के अंदर नाश्ता कर लेना चाहिए। रात का भोजन सूर्यास्त के 40 मिनट के अंदर कर लेना चाहिए। सुबह से शाम तक पूरे दस हजार कदम चलना चाहिए। योग व ध्यान से भी बहुत लाभ होते हैं।

इस अवसर पर ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी', आरोग्य मित्र प्रशिक्षण के राष्ट्रीय प्रमुख डॉ. मुरली कृष्ण, प्रशिक्षण सत्र के संयोजक डॉ. विनोद जैन आदि मौजूद रहे।

स्वच्छता, शालीन जीवन की शिक्षा देने, सादगी और स्वच्छता की आदतें विकसित करने का बेहतरीन मौका गवां रहे हैं।'

गाँधीजी ने धार्मिक स्थलों में फैली गंदगी की ओर भी ध्यान दिलाया था। 3 नवंबर 1917 को गुजरात राजनैतिक सम्मेलन में उन्होंने कहा था, 'पवित्र तीर्थ स्थान डाकोर यहां से बहुत दूर नहीं है। मैं वहां गया था। वहां की पवित्रता की कोई सीमा नहीं है। मैं स्वयं को वैष्णव भक्त मानता हूं, इसलिए मैं डाकोर जी की स्थिति की विशेष रूप से आलोचना कर सकता हूं। उस स्थान पर गंदगी की ऐसी स्थिति है कि स्वच्छ वातावरण में रहने वाला कोई व्यक्ति वहां 24 घंटे तक भी नहीं ठहर सकता। तीर्थ यात्रियों ने वहां के टैंकरों और गलियों को प्रदूषित कर दिया है।' इसी तरह यंग इंडिया में 3 फरवरी 1927 को उन्होंने बिहार के पवित्र शहर गया की गंदगी के बारे में भी लिखा और यह इंगित किया कि उनकी हिन्दू आत्मा गया के गंदे नालों में फैली गंदगी और बदबू के खिलाफ बगावत करती है।

भारतीय रेलवे में आज भी गंदगी का वही आलम है। रेलवे के डिब्बों को और शौचालय साफ रखने के लिए श्रमिकों और कर्मचारियों को तो रखा जाता है जहां तक स्वच्छता और सफाई से संबंधित प्रश्न है हम भारतीय यात्रियों को इस बारे में कोई शर्म महसूस नहीं होती। शौचालयों का सही तरीके से इस्तेमाल नहीं किया जाता। यहां तक कि वातानुकूलित डिब्बों में यात्रा करने वाले पढ़े लिखे लोग भी अपने बच्चों को शौचालय सीट का इस्तेमाल नहीं करवा कर उन्हें बाहर ही शौच करवाते हैं। डिब्बों में कूड़ा फैलना तो आम बात है।

गाँधीजी ने सार्वजनिक रूप से स्वच्छता की ओर सबका ध्यान खींचा

बृजेश श्रीवास्तव

भारत में बाहर से देखने पर भारतीय बहुत आकर्षक नहीं लगते क्योंकि वह सफाई और स्वच्छता के प्रति बहुत अधिक ध्यान नहीं देते और उसे गैर जरूरी समझते हैं।

कांग्रेस के करीब–करीब हर सम्मेलन में दिये अपने भाषण में गाँधीजी ने स्वच्छता के मामले को उठाया। अप्रैल 1924 में उन्होंने दाहोद शहर के कांग्रेस सदस्यों को अच्छी साफ–सफाई रखने के लिए बधाई दी और उन्हें सुझाव दिया कि वह अछूत समझे जाने वाले समुदाय के इलाकों में जाएं और उनमें स्वच्छता के प्रति जागरूकता जगाएं। उन्होंने उसी तरह 1925 में कानपुर कांग्रेस में सफाई रखने के इंतजामों की भी बहुत प्रशंसा की थी।

गाँधीजी मानते थे कि नगरपालिका का सबसे महत्वपूर्ण कार्य सफाई रखना है। उन्होंने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को पार्षद बनने के बाद स्वच्छता के काम करने का सुझाव दिया, 25 अगस्त 1925 को कलकत्ता अब (कोलकाता) में दिए गए भाषण में उन्होंने कहा, 'वह (कार्यकर्ता) गांव के धर्मगुरु या नेता के रूप में लोगों के सामने न आएं बल्कि अपने हाथ में झाड़ू लेकर आएं। गंदगी, गरीबी, निठल्लापन जैसी बुराइयों का सामना करना होगा और उससे झाड़ू, कुनैन की गोली और अरंडी के तेल साथ लड़ना होगा।

पंचायतों की भूमिका के बारे मे गाँधीजी ने कहा था कि गांव में रहने वाले प्रत्येक बच्चे, पुरुष या स्त्री की प्राथमिक शिक्षा के लिए, घर–घर में चरखा पहुंचाने के लिए, संगठित रूप से सफाई और स्वच्छता के लिए पंचायत जिम्मेदार होनी चाहिए। 19 नवंबर 1925 के यंग इंडिया के एक अंक में गाँधीजी ने भारत में स्वच्छता के बोर में अपने विचारों को लिखा। उन्होंने लिखा, 'देश के अपने भ्रमण के दौरान मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ गंदगी को देखकर हुई...इस संबंध में अपने आप से समझौता करना मेरी मजबूरी है।'

तुलसी की पत्तियों को दूध में उबालकर पिएं, दूर होगा माइग्रेन

तुलसी की पत्तियों में होते हैं औषधीय गुण, 5 तरह के रोगों से बचाती है

डेस्क एनबीटी, लखनऊ : तुलसी की पत्तियां औषधीय गुणों से भरपूर होती हैं, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद होती हैं। अगर रोजाना तुलसी की पत्तियों को दूध में उबालकर पिया जाए तो बहुत से रोगों से खुद को बचाया जा सकता है। दूध में तुलसी के पत्ते उबालकर पीने से सिर दर्द या माइग्रेन जैसी दिक्कतों से राहत मिलती है। नियमित रूप से इस औषधि का सेवन इस समस्या को दूर किया जा सकता है। अगर आप सोच रहे हैं कि ऐसा कैसे हो सकता है तो आयुर्वेदाचार्य डॉ. एके मिश्रा आपको बताने जा रहे हैं ऐसे 5 स्वास्थ्य लाभ, जिन्हें आप तुलसी और दूध के साथ हासिल कर सकते हैं।

कैसे करें सेवन

सबसे पहले डेढ़ गिलास दूध को उबालना है। जब दूध उबलना शुरू हो जाए तब इसमें 8 से 10 तुलसी की पत्तियां डालें और उबलने दें। जब दूध एक गिलास हो जाए तब आप गैस बंद कर दें। जब दूध हल्का गुनगुना रह जाए, तब आप इसे पिएं। नियमित सेवन से इन बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है

तुलसी के पत्तों में ऐंटीऑक्सिडेंट्स गुण पाए जाते हैं, जो हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करते हैं। इतना ही नहीं इसके गुण शरीर में कैंसर पैदा करने वाली कोशिकाओं से लड़ने की शक्ति प्रदान करते हैं और उससे रक्षा भी करते हैं। तुलसी की पत्तियों में ऐंटीबैक्टीरियल एवं ऐंटीवायरल गुण भी मौजूद होते हैं, जो सर्दी, खांसी व जुकाम से हमें दूर रखते हैं।

दमा रोग में फायदेमंद

अगर आप सांस संबंधी समस्याओं से परेशान हैं तो दूध के साथ तुलसी की पत्तियों को उबालकर पीएं। ऐसा करना दमा रोगियों के लिए बेहद फायदेमंद साबित बोता है।

तनाव कम होता है

तुलसी के पत्तों में हीलिंग गुण होते हैं। अगर आप तनाव और डिप्रेशन जैसी समस्या से घिरे रहते हैं तो दूध में तुलसी की पत्तियों को उबालकर पिएं। इस औषधि को पीने से मानसिक तनाव और चिंता दूर होती है।

पथरी की समस्या दूर करती है

दूध में तुलसी के पत्तों को उबालकर अगर खाली पेट पिया जाए तो हृदय रोगियों को काफी फायदा मिलता है। अगर किसी व्यक्ति को पथरी की समस्या है तो उसे नियमित रूप से खाली पेट दूध में तुलसी की पत्तियों को उबालकर पीना चाहिए। ऐसा करने से किडनी के पथरी की समस्या और दर्द दूर हो जाता है।

—नवभारत टाइम्स ❑

2 अक्टूबर महात्मा गाँधी का जन्मदिन

❑ दीपा श्रीवास्तव

आँखों पर चश्मा हाथ में लाठी और चेहरे पर मुस्कान, दिल में था उनके हिंदुस्तान।
अहिंसा उनका हथियार था, अंग्रेजों पर भारी जिसका वार था,
जात–पात को भुला कर वो जीना सिखाते थे, सादा हो जीवन और अच्छे हो विचार,
बड़ो को दो सम्मान और छोटो को प्यार, बापू यही सबको बताते थे।
लोगों के मन से अंधकार मिटाते थे, स्वच्छता पर वे देते थे जोर,
माँ भारतीय से जुड़ी थी उनकी दिल को डोर।
ऐसी शख्सियत को हम कभी भूला ना पाएंगें, उनके विचारों को हम सदा अपनायेंगे।

मां की उस बात का विरोध किया जब उनकी मां ने सफाई करने वाले कर्मचारी के न छूने और उससे दूर रहने के लिए कहा था। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि स्वच्छता और सफाई प्रत्येक व्यक्ति का काम है। वह हाथ से मैला ढोने और किसी एक जाति के लोगों द्वारा ही सफाई करने की प्रथा को समाप्त करना चाहते थे।

उन्होंने भारतीय समाज में सदियों से मौजूद अस्पृश्यता की कुरीति और जातीय प्रथा का विरोध किया। सफाई करने वाले जाति के लोगों को गांवों से बाहर रखा जाता था। और उनकी बस्तियां बहुत ही खराब, मलीन और गंदगी से भरी हुई थीं।

समाज में हेय समझे जाने, गरीबी और शिक्षा की कमी की वजह से वह ऐसी बुरी स्थिति में रहते थे। गाँधीजी उन मलिन बस्तियों में गए और उन्होंने अस्पृश्य समझे जाने वाले लोगों को गले लगाया और अपने साथ गए अन्य नेताओं और कार्यकर्ताओं को भी वैसा करने के लिए कहा। गाँधीजी चाहते थे कि इन लोगों की स्थिति सुधरे और वह भी समाज की मुख्य धारा में शामिल हों। उन्होंने पूरे भारत में छात्रों सहित सभी से ऐसी मलिन बस्तियों के लोगों की मदद करने के लिए कहा।

गाँधीजी ने भारतीय समाज में सफाई करने और मैला ढोने वालों द्वारा किए जाने ले अमानवीय कार्य पर तीखी टिप्पणी की उन्होंने कहा, 'हरिजनों में गरीब सफाई करने वाला या 'भंगी' समाज में सबसे नीचे खड़ा है जबकि वह सबसे महत्वपूर्ण है। अपरिहार्य होने के नाते समाज में उसका सम्मान होना चाहिए 'भंगी' जो समाज की गंदगी साफ करता है उसका स्थान मां की तरह होता है। जो काम एक भंगी दूसरे लोगों की गंदगी साफ करने के लिए करता है वह काम अगर अन्य लोग भी करते तो यह बुराई कब की समाप्त हो जाती'।

❑

सच्चा जप-दीन दुःखियों की सेवा

संत ज्ञानेश्वर नदी किनारे जा रहे थे। समीप ही नदी में एक लड़का स्नान कर रहा था। एकाएक उसका पैर फिसल गया, वह तेज बहाव में चला गया। सहायता के लिये चिल्लाया, पर किनारे बैठे महात्मा अपने जप में लगे रहे। उन्होंने एक बार डूबते बालक को देख लिया और फिर आँख बंद कर ली। संत ज्ञानेश्वर बिना विलम्ब किये नदी में कूद पड़े और डूबते बालक को बाहर ले आये। किनारे जप कर रहे महात्मा से संत ज्ञानेश्वर ने पूछा–आप क्या कर रहे हैं? उत्तर मिला–जप कर रहे हैं। पुनः महात्मा ने आंखें बंद कर लीं। संत ज्ञानेश्वर ने पूछा–क्या ईश्वर के दर्शन हुए? उत्तर मिला–नहीं बोले–मन स्थिर नहीं हो रहा है। संत ज्ञानेश्वर ने कहा तो उठो, पहले दीन–दुखियों की सेवा करो, उनके कष्टों में हिस्सा बटाओं अन्यथा उपासना का कोई विशेष लाभ नहीं मिलेगा। महात्मा को अपनी भूल मालूम हुई कि सच्चा जप तो यह था कि डूबते हुए बच्चे को बचाया जाता। उसी दिन से वे महात्मा दीन–दुखियों की सेवा में लग गये।

याद रखो–तुम्हारे पास जो कुछ है, सब भगवान का है और भगवान की सेवा के लिये ही है। उसे अपना मानकर उसका केवल अपने भोग में उपयोग करना बेईमानी है। इस बेईमानी से बचो और समस्त प्राप्त साधनों को भगवान की सेवा में लगाओं। सेवक में सात बाते होनी चाहिए–(1) सेवा में विश्वास, (2) सेवा की पवित्रता, (3) सेवा में गौरव, (4) सेवा में आत्मसंयम, (5) सेवा में उत्साह, (6) सेवा में प्रीति और (7) विनय भाव।

साभार : महाकौशल–संदेश

पावन स्मृति

(पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यो द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं ऐसे उन तमाम दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित है–सम्पादक)

दिनांक	दिवस	महापुरुष का नाम
1 अक्टूबर	पूर्ण–तिथि	पेशावर काण्ड का नायक चन्द्रसिंह गढ़वाली
2 अक्टूबर	जन्म–तिथि	राष्ट्रपुरुष : गांधी जी
3 अक्टूबर	पुण्य–तिथि	राष्ट्रभक्त बौद्धिक योद्धा डॉ0 स्वराज प्रकाश गुप्त
4 अक्टूबर	जन्मतिथि	सागरपार भारतीय क्रांति के अग्रदूत श्यामजी कृष्ण वर्मा
4 अक्टूबर	बलिदान–दिवस	जयमंगल पाण्डे और नादिर अली का बलिदान
6 अक्टूबर	पुण्य–तिथि	गीत के विनम्र स्वर : दत्ताजी उनगाँवकर
6 अक्टूबर	पुण्य–तिथि	भारतीयता के मनीषी राजदूत डॉ लक्ष्मीमल सिंघवी
7 अक्टूबर	राज्यारोहण–दिवस	सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य
7 अक्टूबर	जन्म–तिथि	पत्रकारिता के शलाका पुरुष माणिकचन्द्र बाजपेई
7 अक्टूबर	जन्म–दिवस	क्रांतिकारी : दुर्गा भाभी
9 अक्टूबर	जन्म–तिथि	गृहस्थ प्रचारक : भैया जी दाणी
9 अक्टूबर	जन्म–तिथि	उत्कलमणि गोपबन्धु दास
10 अक्टूबर	जन्म–तिथि	राष्ट्रयोगी : श्री दत्तोपन्त ठेगड़ी
11 अक्टूबर	जन्म–तिथि	आधुनिक चाणक्य : नानाजी देशमुख
14 अक्टूबर	पुण्य–तिथि	हठयोगी स्वतंत्रता सेनानी प्रो0 जयकृष्ण प्रभुदास भंसाली
15 अक्टूबर	बलिदान–दिवस	मुम्बई में 1857 के बलिदानी
15 अक्टूबर	पुण्य–तिथि	अवतारी सन्त : साईंबाबा
15 अक्टूबर	जन्म–तिथि	प्रेरक व्यक्तित्व : महात्मा आनन्द स्वामी
16 अक्टूबर	इतिहास–स्मृति	बंग–भंग के विरोध में अद्भुत रक्षाबन्धन
19 अक्टूबर	जन्म–तिथि	लोकसन्त : पाण्डुरंग शास्त्री आठवले
20 अक्टूबर	पुण्य–तिथि	राजनीतिक कीचड़ में कमल जगदीश प्रसाद माथुर
22 अक्टूबर	जन्म–दिवस	दिव्य प्रेम के साधक : आशीष गौतम
23 अक्टूबर	निर्वाण–दिवस	विरक्त सन्त : श्री दिगम्बर स्वामी
24 अक्टूबर	पुण्य–तिथि	गान्धीवादी चिंतक : श्री धर्मपाल
26 अक्टूबर	जन्म–तिथि	गोविंद भक्त : सन्त नामदेव
28 अक्टूबर	जन्म–तिथि	भारत की महान् पुत्री : भागिनी निवेदिता
30 अक्टूबर	जन्म–तिथि	परमाणु कार्यक्रमों के प्रणेता डॉ0 होमी भाभा
31 अक्टूबर	जन्म–तिथि	लौहपुरुष सरदार पटेल

महात्मा गाँधी : भारत में स्वच्छता और सफाई के अगुवाकार

गाँधी जी ने एक बार कहा था कि, हिंदुस्तानियों पर अक्सर यह आरोप लगाया जाता रहा है कि उनकी आदतें बहुत ही बेहूदा होती हैं और वे अपने घर तथा आस–पड़ोस को साफ सुथरा नहीं रखते हैं लेकिन मुझे कुछ कड़ुवे अनुभव थे। मैंने देखा कि मैं जनता को सफाई के प्रति उनके कर्तव्यों को उतनी आसानी से नहीं गिना पा रहा था जितनी आसानी से उनको उनके अधिकारों के बारे में बता रहा था। कुछ जगहों पर तो मेरा तिरस्कार भी किया गया, पर कुछ जगहों पर मुझे विनम्र उदासीनता मिली। अपने आस पड़ोस को साफ रखने के लिए लोगों को मानसिक तौर पर तैयार होना बहुत ही ज्यादा था। इस काम के लिए लोगों से पैसों की उम्मीद रखने का तो कोई सवाल ही नहीं था। इन अनुभवों से मुझे पहले से कहीं बेहतर सबक मिला कि असीमित धैर्य के बिना लोगों से कोई भी काम करवाना असंभव था। यह सुधारक है जो कि सुधार को लेकर चिंतित है, न कि एक समाज, जिससे उसको विरोध, घृणा और यहां तक कि प्राणघातक उत्पीड़न के सिवा कुछ भी बेहतर चीज पाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।"

वह अपनी छोटी उम्र में ही यह जान गए और पूरी जिंदगी ऐसा महसूस करते रहे। उनको पता था कि भारत में सफाई और स्वच्छता की स्थिति वास्तव में अच्छी नहीं है और ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त शौचालय की कमी के लिए उतने ही प्रयास किए जाने चाहिए जितने स्वराज्य प्राप्त करने के लिए। उन्होंने आगे कहा कि जब तक हम लोग, "अपनी गंदी आदतों से छुटकारा नहीं पा जाते और शौचालयों में सुधार नहीं कर लेते तब तक स्वराज्य का कोई महत्व नहीं हो सकता।" उन्होंने पहले दक्षिण अफ्रीका और फिर भारत में स्वराज्य के लिए संघर्ष करते हुए सफाई, स्वच्छता और कचरे के प्रभावी प्रबंधन के लिए अपना संघर्ष जारी रखा। सन् 1947 में आजादी हासिल करने के एक साल बाद गाँधी जी की हत्या कर दी गई लेकिन सफाई और स्वच्छता के उनके विचार को लिखित और भावात्मक दोनों रूपों में लगातार फैलते रहे।

पहले तो यह केवल एक विचार था लेकिन सन् 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इसको एक स्वच्छ भारत अभियान के रूप मे शुरू करने के बाद इसने राष्ट्रीय जन आंदोलन का आकार ले लिया। सन् 2014 में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारतवासियों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण में 'स्वच्छ भारत' का भी जिक्र किया था। उन्होंने कहा, "हम महात्मा गाँधी की 150वीं वर्षगांठ का जश्न कैसे मनाते हैं? सफाई और स्वच्छता महात्मा गाँधी के दिल के सबसे करीब थी। क्या हम लोग, जब 2019 में महात्मा गाँधी की 150वीं वर्षगांठ मनाएंगे तो हम अपने गाँव, शहर, इलाके, स्कूल, मंदिर अस्पताल और जो भी जगहें हमारे पास हैं वहाँ पर गंदगी का एक धब्बा तक न रखने का संकल्प नहीं लेते हैं? यह केवल सरकार ही नहीं बल्कि जनता की भागीदारी से होता है। इसीलिए यह हम लोगों को एक साथ मिलकर करना है।" इस राष्ट्रव्यापी स्वच्छता अभियान 'स्वच्छ भारत अभियान' को 2 अक्टूबर 2014 को लागू कर दिया गया था, इस योजना का उद्देश्य 2019 तक भारत को पूरी तरह से स्वच्छ बनाना था। मोदी ने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन राष्ट्रभक्ति से प्रेरित और राजनीति से परे है। उनके इस विचार ने लोगों के विचारों को गाँधी के स्वच्छता के विचारों में बदल दिया।

गाँधी जी के जीवन में सफाई और स्वच्छता का महत्व : महात्मा गाँधी की अगुवाई में भारत आजाद तो हो गया लेकिन स्वच्छ भारत की उनकी इच्छा

उन्होंने भारतीयों में सफाई और स्वच्छता से जुड़ी शिक्षा की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि "सफाई कार्य भारत में एक विशेष कार्य होना चाहिए।" उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि हर कोई खुद में ही एक सफाई कर्मी होना चाहिए।

गाँधी ने, गुजरात में एक राजनीतिक सम्मेलन के दौरान लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि गंदी सड़कों, घरों और रास्तों से हमारे घरों में महामारी फैल सकती है। उन्होंने कहा, "अगर हम भारत से महामारी को खत्म कर देते हैं तो हम स्वराज्य के लिए और ज्यादा मजबूत हो जाएंगे।" उन्होंने साफ पानी पीने, अच्छी हवा में सांस लेने और खुले में शौच से निपटने के लिए स्पष्ट तरीकों का पालन करके महामारी को भारत से उखाड़ फेंकने पर जोर दिया।

गाँधी के सफाई और स्वच्छता के विचार दक्षिण अफ्रीका से कैसे प्रभावित हुए?

जब गाँधी दक्षिण अफ्रीका में थे तो छुआछूत और अस्वच्छता को खत्म करने का विचार अपने आप उनके मन में आया। उनके लिए स्वच्छता अभियान समाज का एक मौलिक हिस्सा था जिसमें एक जातिहीन समाज निर्मित करने की क्षमता होती है। अपने आप सफाई करने और छूआछूत के मुद्दे पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि, "हर कोई खुद का सफाई कर्मी है।" और यह विचारधारा एक स्वच्छ और स्वस्थ समाज का निर्माण करने और छुआछूत को खत्म करने लिए जरूरी है। गाँधी भारतीयों को दिए गए 'अशुद्ध' टैग को खत्म करने के लिए स्वच्छता को एक जरूरी घटक मानते थे। भारतीयों को पश्चिमी देशों में चलाए गए सभ्यता मिशन की सख्त जरूरत थी।

गाँधी के सत्याग्रह अभियान में निजी और सार्वजनिक स्वच्छता के मुद्दों को लेकर उनकी चिंता शामिल थी। गोरों ने घोषणा कर दी थी कि भारतीय गंदे होते हैं और इनको अलग रखा जाना चाहिए, इस घोषणा को खत्म करना ही गाँधी की प्राथमिकता बन गई थी। इससे निपटने के लिए उन्होंने विधानसभा को एक खुला पत्र लिखा कि भारतीय भी यूरोपीय लोगों की तरह साफ सुथरे रहने के लायक हैं बशर्ते कि उनको समान मौका और मान्यता मिलना चाहिए। हालांकि, गाँधी को भारतीयों की जीवन शैली में स्वच्छता की कमी के बारे में पता था और भारतीयों को पूरी तरह से स्वच्छता पर विचार करने की जरूरत पर जोर दिया गया था। गाँधी ने भारतीयों के साथ होने वाली अपनी बैठकों में छुआछूत के मुद्दों पर बात करते हुए सफाई और स्वच्छता से संबंधित मुद्दों का भी जिक्र किया।

दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए गाँधी ने भारतीयों को अपने विचारों से अवगत करवाया और उन्हें शौच पर सूखी राख या धूल डालने और शौचालय को साफ और सूखा रखने के लिए प्रेरित किया। अपने 'गाइड टू लंदन' में रोजाना स्नान की जरूरत पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि "स्वच्छता भक्ति से बढ़कर है।" दूसरे लेख "अवर इनसेनिटेशन" में उन्होंने लिखा है कि "वीरों, स्वराज्य केवल स्वच्छता द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।"

निष्कर्ष : महात्मा गाँधी को स्वच्छ भारत का आइकन चुनकर, भारत ने एक बार फिर से राष्ट्रपिता में अपना विश्वास जता दिया है। आमतौर पर एक क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़े बिना ही गाँधी हर तरह से एक क्रांतिकारी थे। हर भारतवासी के जीवन में सफाई और स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए गाँधी जी द्वारा किए गए प्रयास वाकई में तारीफ के लायक हैं। वह स्वच्छता की मशाल को भारत सहित कई देशों में वह क्रांति प्राप्त करने करने के लिए खुद लेकर गए जिसे वे देखना चाहते थे। अगले साल महात्मा गाँधी की 150वीं वर्षगांठ मनाई जानी है। यह हर भारतीय की जिम्मेदारी है कि वह पर्यावरण संरक्षण और स्वस्थ भविष्य वाले भारत का उनका सपना पूरा करने के लिए एक स्वच्छ देश बनाने में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें।

महात्मा गाँधी का जीवन एवं कार्यों की चित्र प्रदर्शनी

महात्मा गाँधी का जन्मस्थल
काठियावाड़, पोरबन्दर

महात्मा गाँधी के पिता
करमचंद गाँधी

महात्मा गाँधी की माता
पुतलीबाई

सात वर्षीय मोहन,
शर्मीले और एकांतप्रिय

युवा मोहन की प्रारम्भिक शिक्षा का स्थल
एलफ्रेड हाई स्कूल, राजकोट

मैट्रिकुलेशन के पश्चात मोहन कानून
की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए

सन् 1896 और 1901–02 में वकील
के रूप में जोहानिसबर्ग में मोहन

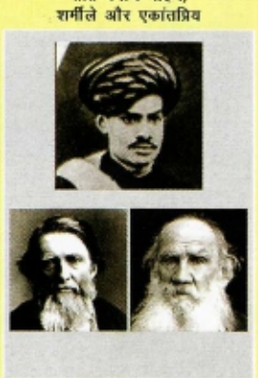

गाँधी जी के प्रेरणा स्रोत रायचंद भाई,
रस्किन और टॉल्स्टॉय

गाँधी जी द्वारा 1904 में स्थापित
फीनिक्स आश्रम, डरबन
यह गाँधी जी का सामुदायिक जीवन का पहला
प्रयोग था जहां उन्होंने साधारण जीवन अपनाया।

गाँधी जी के जर्मन दोस्त कैलनबैक द्वारा भेंट की
गई जमीन पर 1910 में टॉल्स्टॉय फार्म की स्थापना की
यहां आश्रमवासी एकसाथ रहकर कार्य करते वह आश्रम
के नियम व अनुशासन का पालन करते।

1899–1902 के बोअर युद्ध और 1906 के जुलू विद्रोह
में गाँधी जी और उनकी भारतीय स्वयंसेवकों की
एम्बुलेंस कोर ने घायलों को प्राथमिक चिकित्सा सेवाएं दी

दक्षिण अफ्रिका में भारतीयों के संघर्ष को लेकर
गोपाल कृष्ण गोखले, सर्वेन्ट ऑफ इंडिया
सोसाइटी के संस्थापक, उन्होंने अक्टूबर 1912
में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की।

जब सरकार ने याचिकाओं पर ध्यान नहीं दिया तब
गाँधीजी ने सैकड़ों भारतीय–पुरुषों, महिलाओं और
बच्चों के साथनातात से ट्रांसवाल के लिए
ऐतिहासिक पैदल मार्च की शुरुआत की।

निष्क्रिय प्रतिरोध और सत्याग्रह आंदोलनों ने दमनकारी
कानूनों की शांतिपूर्ण अवज्ञा का रूप धारण कर लिया और
ऐसी अवज्ञा का दंडरूपी प्रतिकूल भारतीय समुदाय ने
बहादुरी से भुगता। दक्षिण अफ्रीका अन्याय और बुराई को
दूर करने की प्रयोगशाला बना

महात्मा गाँधी ने किंग्सले हॉल के बाहर पौधरोपण किया

गोलमेज सम्मेलन के बाद गांधी जी स्विट्जरलैंड में मशहूर विद्वान रोमां लां से मिले और बातचीत की

गोलमेज सम्मेलन से वापसी के बाद 4 जनवरी को सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करके यरवदा जेल भेज दिया

जनवरी 1934 में बिहार में भयावह भूकंप आया गाँधी जी भूकंप प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचे

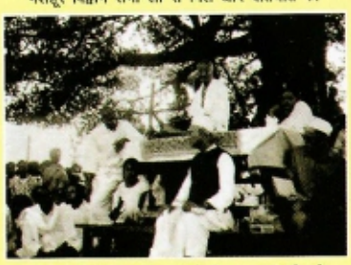

गाँधीजी ने हरिजन उत्थान के लिए यात्राएं की जो अधिकांशतः दक्षिण की थी यहां उन्हें भरपूर समर्थन मिला

गाँधीजी ने कुष्ठ रोगियों की सेवा की, आश्रम में कुष्ठ रोगी परचुरे शास्त्री की सेवा करते गाँधी जी

गाँधीजी एक सभा में समय पर पहुंचने के लिए साइकिल चला कर गए।

गाँधीजी ने अपने सार्वजनिक जीवन में तृतीय श्रेणी में ही यात्राएं की।

गांधीजी के लिए चरखा जीवन का पहिया था और करोड़ों ग्रामीणों के लिए वर्ष भर में कुछ महीने कृषि कार्य के पश्चात् खाली रहते थे, उनकी नाममात्र की आय में कुछ पैसों की वृद्धि करने का यह एक सहज और सुगम साधन बन गया। गाँधीजी ने स्वयं भी अपने सभी खाली समय में चरखा कातकर ग्रामीणों के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया।

इण्डियन ओपीनियन, यंग इण्डिया, नवजीवन, और हरिजन जैसे साप्ताहिक गाँधीजी के आंदोलनों और कार्यों के सशक्त मुखपत्र बने

साबरमती आश्रम भंग करने के बाद गाँधीजी वर्धा के निकट सेगांव चले आए जो सेवाग्राम के नाम से जाना गया।

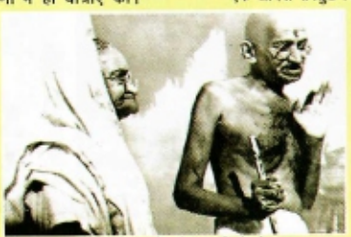

'बा' न केवल अपने बच्चों की मां थीं वे सेवाग्राम तथा प्रत्येक लोगों की मां बन चुकी थी वे सभी का ध्यान रखती

गाँधीजी ने कई मायनों में जवाहरलाल नेहरू पर अपना प्रभाव डाला और उन्हें राष्ट्र के मुक्ति संग्राम से जोड़ा

गाँधीजी ने चाय को करुणा की कविता कहकर वर्णित किया जो सम्पूर्ण मानवेत्तर विश्व का प्रतिनिधित्व करती है।

कैजपुर में गाँधीजी ने सरल शिल्प प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जो कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों का अंग बना।

सुभाष चन्द्र बोस को 1938 में हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष पद के लिए चुना गया गांधीजी उनकी प्रशंसा करते थे

बापू की दृष्टि में मातृ-शक्ति

आपने महात्मा गाँधी की तस्वीरों पर गौर किया है? ज्यादातर तस्वीरों में गाँधी के करीब काफी लोगों की भीड़ दिखाई देती है। इस भीड़ में कुछ नाम ऐसे लोगों के रहे जिन्हें भारत का लगभग हर नागरिक जानता है मसलन जवाहर लाल नेहरू सरदार पटेल या कस्तूरबा गाँधी। लेकिन गाँधी के करीब रही इसी भीड़ में कुछ लोग ऐसे भी रहे जिनके बारे में शायद कम ही लोग जानते हों। हम आपको यहां कुछ ऐसी ही महिलाओं के बारे में बताने जा रहे हैं जो मोहन दास करम चन्द्र गाँधी के विचारों की वजह से उनके बेहद करीब रहीं। इन महिलाओं की जिंदगी में गाँधी का गहरा असर रहा और जिस रास्ते पर महात्मा ने चलना शुरू किया था ये महिलाएं उसी रास्ते पर चलते हुए अपनी–अपनी जिंदगी में आगे बढ़ीं।

1. मैडलीन स्लेड उर्फ मीराबेन

मैडलीन ब्रिटिश एडमिरल सर एडमंड स्लेड की बेटी थीं। एक ओहदेदार ब्रिटिश अफसर की बेटी होने के चलते उनकी जिंदगी अनुशासन में गुजरी। मैडलीन जर्मन पियॉनिस्ट और संगीतकार बीथोवेन की दीवानी थीं। इसी वजह से वो लेखक और फ्रांसीसी बुद्धिजीवी रोमैन रौलेंड के संपर्क में आईं। ये वही रोमैन रौलेंड थे, जिन्होंने न सिर्फ संगीतकारों पर लिखा बल्कि महात्मा गाँधी की बॉयोग्राफी भी लिखी। गाँधी पर लिखी रोमैन की बॉयोग्राफी ने मैडलीन को काफी प्रभावित किया। गाँधी का प्रभाव मैडलीन पर इस कदर रहा कि उन्होंने जिंदगी को लेकर गाँधी के बताए रास्तों पर चलने की ठान ली। गाँधी के बारे में पढ़कर रोमांचित हुई मैडलीन ने उन्हें खत लिखकर अपने अनुभव साझा किए और आश्रम आने की इच्छा जाहिर की।

शराब छोड़ने, खेती सीखना शुरू करने से लेकर शाकाहारी बनने तक, मैडलीन ने गाँधी का अखबार यंग इंडिया भी पढ़ना शुरू किया। अक्टूबर 1925 में वो मुंबई के रास्ते अहमदाबाद पहुंचीं। गाँधी से अपनी पहली मुलाकात को मैडलीन ने कुछ यूं बयां किया, 'जब मैं वहां दाखिल हुई तो सामने से एक दुबला शख्स सफेद गद्दी से उठकर मेरी तरफ बढ़ रहा था। मैं जानती थी कि ये शख्स बापू थे। मैं हर्ष और श्रद्धा से भर गई थी। मुझे बस सामने एक दिव्य रोशनी दिखाई दे रही थी, मैं बापू के पैरों में झुककर बैठ जाती हूं। बापू मुझे उठाते हैं और कहते हैं– तुम मेरी बेटी हो। 'मैडलीन और महात्मा के बीच इस दिन से एक अलग रिश्ता बन गया। बाद में मैडलीन का नाम मीराबेन पड़ गया।

2. निला क्रैम कुक

आश्रम में लोग निला नागिनी कहकर पुकारते। खुद को कृष्ण की गोपी मानने वाली निला माउंटआबू में एक स्वामी (धार्मिक गुरु) के साथ रहती थीं। अमरीका में जन्मी निला को मैसूर के राजकुमार से इश्क हुआ। निला ने साल 1932 में गाँधी को बंगलुरु से खत लिखा था। इस खत में उन्होंने छुआछूत के खिलाफ किए जा रहे कामों के बारे में गाँधी को बताया। दोनों के बीच खतों का सिलसिला यहां से शुरू हुआ। अगले बरस फरवरी 1933 में निला की मुलाकात यरवडा जेल में महात्मा गाँधी से हुई। गाँधी, निला को साबरमती आश्रम भेजते हैं, जहां कुछ वक्त बाद ही वो नए सदस्यों से खास जुड़ाव महसूस करने लगी थीं। उदार ख्यालों वाली निला के लिए आश्रम जैसे एकांत माहौल में फिट होना मुश्किल भरा रहा। ऐसे में वो एक दिन आश्रम से भाग गईं। बाद में वो एक रोज वृंदावन में मिलीं थीं। कुछ वक्त बाद उन्हें अमरीका भेज दिया गया, जहां उन्होंने इस्लाम कबूल लिया और कुरान का अनुवाद किया।

3. सरला देवी चौधरानी

उच्च शिक्षा, सौम्य सी नजर आने वाली सरला देवी की भाषाओं, संगीत और लेखन में गहरी रुचि थी। सरला रविंद्रनाथ टैगोर की भतीजी थीं। लाहौर में गाँधी सरला के घर पर ही रुके थे। ये वो दौर था, जब सरला के स्वतंत्रता सेनानी पति रामभुज दत्त चौधरी जेल में थे। दोनों एक–दूजे के काफी करीब रहे। इस करीबी को समझने का एक अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि गाँधी सरला को अपनी आध्यात्मिक पत्नी बताते थे। बाद के दिनों में गाँधी ने ये भी माना कि इस रिश्ते की वजह से उनकी शादी टूटते–टूटते बची। गाँधी और सरला

गाँधी को गोली मारी, तब वहां आभा भी मौजूद थीं।

8. मनु गाँधी

बहुत हल्की उम्र में मनु महात्मा गाँधी के पास चली आई थीं। मनु महात्मा गाँधी की दूर की रिश्तेदार थीं। गाँधी मनु को अपनी पोती कहते थे। नोआखाली के दिनों में आभा के अलावा ये मनु ही थीं, जो अपने बापू के बूढ़े शरीर को कांधा देकर चलती थीं। जिन रास्तों में महात्मा गाँधी के कुछ विरोधियों ने मल–मूत्र डाल दिया था, इन रास्तों पर झाड़ू उठाने वालों में गाँधी के अलावा मनु और आभा ही थीं। कस्तूरबा के आखिरी दिनों में सेवा करने वालों में मनु का नाम भी सबसे ऊपर आता है। मनु की डायरी पर गौर करें तो उससे ये जानने में काफी मदद मिलती है कि महात्मा गाँधी के आखिरी के कुछ साल कैसे बीते थे।

❑

व्रत-त्यौहार, अक्टूबर 2019

दिनांक	दिन	व्रत–त्यौहार
2	बुधवार	वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, गाँधी व शास्त्री जयंती
4	शुक्रवार	बिल्य आमंत्रण
5	शनिवार	सरस्वती आवाहन, महानिशा पूजा, अन्नपूर्णा परिक्रमा दिन
6	रविवार	महाष्टमी व्रत, महानवमी व्रत
7	सोमवार	दुर्गा देवी विसर्जन, नवरात्र पारण
8	मंगलवार	विजयादशमी, अपराजिता पूजन, शस्त्रपूजा, माधवाचार्य जयंती
9	बुधवार	पांपाकुशा एकादशी व्रत, भरत–मिलाप
11	शुक्रवार	प्रदोष व्रत
13	रविवार	स्नान–दान–व्रत पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा, बाल्मीकि जयंती
17	गुरुवार	संकष्टी करवा चौथ व्रत
18	शुक्रवार	तुला संक्राति दिन
19	शनिवार	चेहल्लुम
20	रविवार	राधाष्टमी व्रत, श्रीराधा प्राकट्योत्सव
21	सोमवार	अहोई अष्टमी व्रत
24	गुरुवार	रम्भा एकादशी व्रत
25	शुक्रवार	प्रदोष व्रत, गोवत्स 12, धनतेरस
26	शनिवार	नरक चतुर्दशी, मास शिव व्रत, हनुमानजी व धन्वन्तरी प्राकट्योत्स्व
27	रविवार	श्राद्ध अमावस्या, दीपावली, महाकाली पूजा
28	सोमवार	स्नान–दान, सोमवती अमावस्या, अन्नकूट, गोवर्धनपूजा
29	मंगलवार	गोवर्धनपूजा, भैयादूज, चित्रगुप्त पूजा, चन्द्रदर्शन
31	गुरुवार	वैनायकी गणेश व्रत

मानव जीवन का उद्देश्य जन्मों–जन्म के कर्म बंधन को तोड़ना और संपूर्ण मुक्ति को प्राप्त करना है। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करने के लिए पहले आत्मज्ञान की प्राप्ति करना आवश्यक है और यदि किसी को आत्मज्ञान प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलता तो उसे परोपकार में जीवन व्यतीत करना चाहिए।

इस स्थिति के लिए आवेदन करना दो कारकों से प्रेरित था। सबसे पहले, हमारे बच्चों के लिए हमारी शिक्षा प्रणाली को बदलने की इच्छा। मुझे यह देखकर निराशा हुई कि मेरे तीन बच्चों के अनुभवों से शिक्षा प्रणाली कितनी कम हो गई थी। शून्य–राशि का खेल जो हमारे स्कूल सिस्टम में आकलन और चयन प्रक्रिया के माध्यम से होता है, केवल ऐसे व्यक्ति पैदा करता है जो व्यक्तिवादी और स्वार्थी होते हैं, जबकि तंत्रिका विज्ञान के शोध से पता चलता है कि हम सभी स्वभाव से सशक्त हैं। दूसरा कारण यह था कि मुझे संस्थान के नाम से प्रेरित किया गया था। लेकिन यहाँ मैं पिछले पाँच वर्षों में अपने भीतर उभर रहे बड़े बदलाव को देखता हूँ। केवल गाँधी के लिए जो खड़ा था, उसकी वकालत करने के बजाय, मैंने प्रत्येक व्यक्ति, विशेष रूप से युवा, को खुद के लिए सोचने, मानदंडों और मान्यताओं पर सवाल उठाने और यथास्थिति को स्वीकार न करने के लिए प्रशिक्षित करने का महत्व सीखा है। मैंने समाज के भीतर अपनी जगह खोजने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रशिक्षित करने के महत्व को सीखा है और अधिक महत्वपूर्ण रूप से समाज को एक सशक्त और दयालु फ्रेम के भीतर समाज को आकार देना है। मैं अब कोशिश करता हूं–मैं कहता हूं कि कोशिश करना आसान नहीं है, क्योंकि निर्णय लेने से पहले खुद को दूसरे के जूतों में डालकर और दूसरों की चिंता करने वाले करुणा दिखाते हुए खुद को दूसरे के जूतों में डालकर प्रतिच्छेदन के रावल्सियन प्रमेय का प्रतिकार करना आसान नहीं है। मेरा मानना है कि गाँधी के कुछ ऐसे उपदेश हैं जो अब मैं अपने दैनिक जीवन में अभ्यास करने की कोशिश करता हूं।

प्रश्न– हम महात्मा गाँधी के जन्म की 150 वीं वर्षगांठ समारोह के बीच में हैं, इसलिए उनकी स्मृति को सम्मानित करने के लिए एमजीआईईपी की क्या योजनाएं हैं?

युवा इस ग्रह के भविष्य हैं। मैं कहता हूं कि ग्रह और देश नहीं क्योंकि हमें राष्ट्रीय सीमाओं और हितों से परे सोचना चाहिए। बढ़ती जनसंख्या, आबादी के बीच परस्पर संबंध और आम पारिस्थितिक चुनौतियाँ, जिनका सामना हम आज जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता प्रसार जैसे ग्रहों की भलाई की दिशा में काम करने के लिए करते हैं। इस उद्देश्य के लिए, MGIEP अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के लिए अगस्त 2019 में आयोजित होने वाली दया पर एक विश्व युवा कांग्रेस के रूप में एक वैश्विक मंच प्रदान करने का इरादा रखता है। गाँधी का एक सिद्धांत अध्यापन दया के कृत्यों के बारे में है और यह वास्तविक कार्रवाई के लिए कहता है न कि केवल गाँधी के बारे में बातचीत और बातचीत। यह केवल गाँधी के बारे में बात करने और अहिंसा और व्यक्तिवाद के अपने सिद्धांतों के बहुत विपरीत करने के लिए एक पड़ाव डालने का समय है।

दयालुता पर विश्व युवा कांग्रेस का विचार युवाओं द्वारा दयालुता के कृत्यों पर जोर देना है और इसके लिए यह सिर्फ एक दिन, एक साल, लेकिन हमेशा के लिए परे है जब तक कि हमारे ग्रह युद्धों, हथियारों और हिंसा के बारे में नहीं सोचते हैं। शांति – यह एक ऑक्सीमोरोन से ज्यादा कुछ नहीं है! लेकिन हमें नीति निर्माताओं की वर्तमान पीढ़ी को नहीं भूलना चाहिए।

यूनेस्को के लिए भारतीय प्रतिनिधिमंडल के साथ ने गाँधी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में हर साल पेरिस में मुख्यालय में वार्षिक अहिंसा व्याख्यान का आयोजन किया। शांति के लिए नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, तवाक्कोल कर्मन जैसे दिग्गजों को अपने स्वयं के व्यक्तिगत अनुभवों और अहिंसा के साथ प्रयोगों के बारे में बात करने के लिए आमंत्रित किया गया है। हम इस साल नवीनतम कृत्रिम बुद्धिमत्ता और होलोग्राम तकनीक का उपयोग करके गाँधी के साथ एक बातचीत को प्रोत्साहित करके कुछ अलग करने की उम्मीद करते हैं – यहाँ परिचालन शब्द आशा है कि हम अभी भी इसको वास्तविकता बनाने के लिए आवश्यक कच्चे वीडियो और ऑडियो डेटा की सोर्सिंग कर रहे हैं।

मोक्ष की लालसा है, मैं बस सभी प्राणियों के दुखों के अंत की कामना करता हूं, दुःख से पीड़ित हूं)

कॉर्पोरेट नेता आज एक सकारात्मक छवि की तलाश करते हैं, एक, जो कुल समाज के हिस्से के रूप में व्यापार करती है। व्यावसायिक घराने न केवल उनकी दक्षता, बल्कि उनके मानवतावाद, उनकी सामाजिक जागरूकता और राष्ट्रीय समस्याओं पर उनकी प्रतिक्रिया का भी प्रदर्शन करना चाहते हैं। रिलायंस के चेयरमैन मुकेश अंबानी ने सुनामी राहत में योगदान के रूप में प्रधानमंत्री राहत कोष को 5.5 करोड़ रु., इंडिया इंक ने सुनामी से प्रभावित पीड़ितों के लिए दान पर रोक नहीं लगाई है। मानवीय सहायता के प्रबंधन में कॉरपोरेट इंडिया के प्रवेश से देश भर में राहत कार्यों के लिए संयुक्त रूप से 10,000 से अधिक कंपनियों ने संसाधन जुटाए हैं। CII ने चेन्नई और दिल्ली में समन्वय इकाइयाँ स्थापित की हैं। तमिलनाडु राज्य सरकार नागपट्टनम में पीड़ितों के लिए 3000 कंबल चाहती थी। संदेश को सीआईआई को अवगत कराया गया, जिसने बाद में इसे अपनी सदस्य–कंपनियों को दे दिया। लुधियाना के एक व्यापारी ने पूरी आवश्यकता के साथ, जिसे एक ट्रांसपोर्ट कंपनी द्वारा दिल्ली ले जाया गया था। अंत में, इसे ब्लू डार्ट द्वारा उठाया गया और प्रभावित क्षेत्रों के गोदामों में ले जाया गया। लॉजिस्टिक्स और ट्रांसपोर्ट फर्मों ने मुफ्त में राहत सामग्री लेकर प्रक्रियाओं को आसान बना दिया है। चेन्नई में आरपीजी (फूड वर्ल्ड) श्रृंखला ने अपने खुदरा दुकानों में भोजन, कपड़े और सामान्य प्रावधान एकत्र किए, जिन्हें सैमसंग ट्रकों से राहत शिविरों में ले जाया गया। भूकंप से उत्पन्न सुनामी के पीड़ितों के कल्याण के लिए कई सार्वजनिक उपक्रमों ने भी दान दिया। बिजली मंत्री पी.एम. सईद, सभी केंद्रीय बिजली क्षेत्र के उपक्रमों की ओर से, रुपये का चेक प्रस्तुत किया। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को 15 करोड़। नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन (8 करोड़ रुपये), पावर फाइनेंस कॉरपोरेशन (1.5 करोड़ रुपये), एनएचपीसी, पावर ग्रिड और आरईसी (1 करोड़ रुपये) और एसजेवीएन, पीपको, डीवीसी (50 लाख रुपये) द्वारा किया गया योगदान।) भयावह ज्वार की लहरों से बुरी तरह प्रभावित लोगों के लिए राहत प्रयासों में मदद करने के लिए पीएम के राहत कोष में गए। ONGC ने रु. राहत प्रयासों के लिए 2 करोड़ और नागपट्टिनम क्षेत्र में खाद्य पैकेट वितरित किए। पेट्रोलियम प्रमुख ने बचाव कार्यों के लिए अपने हेलीकॉप्टरों की पेशकश की और चेन्नई में पीड़ितों के लिए हर हफ्ते 3 भोजन प्रदान किए। पंजाब नेशनल बैंक ने 5 करोड़ रुपए, पीएम के राहत कोष में, और उसके कर्मचारियों ने एक दिन का वेतन पीएम के कोष में दान कर दिया। पीएनबी ने अपनी विभिन्न शाखाओं को राहत कोष के लिए चंदा इकट्ठा करने के लिए अधिकृत किया, जो निःशुल्क है। पिछले कुछ वर्षों में, कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) के विषय के बारे में बहुत अधिक चर्चा और प्रचार हुआ है। यह विश्व आर्थिक मंच की बैठकों में अग्रणी मुद्दों में से एक बन गया है। अर्थशास्त्री एडम स्मिथ जिन्होंने पूँजीवाद की बाइबल 'वेल्थ ऑफ नेशंस' लिखी थी, अधिक महत्वपूर्ण रूप से 'ए थ्योरी ऑफ मोरल सेंटीमेंट्स' भी लिखी, जिसमें उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि दूसरों के लिए सहानुभूति और उचित सम्मान किसी भी सभ्य समाज का आधार था। महात्मा गाँधी ट्रस्टीशिप मॉडल में विश्वास करते थे, जिससे जो भी संपत्ति बनती है उसे समाज को वापस करना पड़ता है। सीएसआर को नैतिक मूल्यों का सम्मान करने और लोगों, समुदायों और प्राकृतिक वातावरण का सम्मान करने वाले तरीकों से व्यावसायिक सफलता प्राप्त करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसके सरलतम रूप में यह है कि आप क्या करते हैं, आप कैसे करते हैं और कब और क्या कहते हैं।

चूंकि कॉर्पोरेट निकायों को उस समुदाय पर आकर्षित करना है जिसमें वे सभी संसाधनों के लिए काम करते हैं, उनके पास अपने कई हितधारकों के लिए दायित्व भी हैं। हितधारकों को उन लोगों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो कॉर्पोरेट नीतियों और प्रथाओं से प्रभावित होते हैं। आज, यह स्वीकार किया जाता है कि व्यापार की न केवल वित्तीय जवाबदेही है, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी भी है, जिसे लोकप्रिय रूप से सुशासन के ट्रिपल बॉटम लाइन के रूप में जाना जाता है। सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन

हिंसा और आतंकवाद

आतंकवाद व्यक्ति और राज्य प्रायोजित दोनों हो सकता है। हाल के दिनों में, धार्मिक कट्टरवाद ने खतरनाक अनुपात ग्रहण किया है, हालांकि यह हमेशा एक रूप या दूसरे में मौजूद रहा है। जातिवाद, जो हिंसा को जन्म देता है, न केवल भारत और मुस्लिम देशों में, बल्कि संयुक्त राज्य अमेरिका में भी सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करने का एक उपकरण बन गया है। धार्मिक कट्टरवाद आतंकवादियों के सबसे पुराने साधनों में से एक है। स्थिति यह मांग करती है कि सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में अहिंसक तकनीकों को तुरंत व्यवहार में लाया जाए।

गाँधीजी ने कहा कि हिंसा सिद्धांत के अनुसार गलत थी। उन्होंने कहा कि इसका विरोध करना हर एक का कर्तव्य है। लेकिन हिंसा के प्रतिरोध का तरीका, गाँधीवादी तकनीक में गहरा है। प्रतिहिंसा से हिंसा का विरोध स्पष्ट रूप से गलत है। एक गलत को दूसरे गलत द्वारा सही नहीं किया जा सकता। एक और गलत का जोड़ कम नहीं होता है, लेकिन पहले से ही अस्तित्व में बुराई को जोड़ता है। इसलिए हिंसा का विरोध सबसे पहले किया जाना चाहिए और जब अनुनय विफल हो जाता है, तो उसे अहिंसक तरीके से विरोध किया जाना चाहिए। आलोचक अक्सर यह समझने में विफल रहते हैं कि गाँधीवादी प्रकार का अहिंसक प्रतिरोध भी एक 'बल' है जो हिंसा से अलग है। दो शब्द 'हिंसा' और 'बल' का इस्तेमाल अक्सर एक–दूसरे के लिए किया जाता है ताकि हम यह समझने में नाकाम रहें कि बल को हमेशा हिंसक नहीं होना चाहिए। गाँधीजी के लिए, अहिंसक प्रतिरोध एक ऐसा बल है जो हिंसक होने वाले बल को गिनता है। गाँधीजी को सरकार की संगठित हिंसा या लोगों की असंगठित हिंसा से कोई लेना–देना नहीं था। वह दोनों के बीच कुचलना पसंद करेंगे। उसके लिए, राज्य द्वारा प्रायोजित हिंसा के रूप में लोकप्रिय हिंसा हमारे रास्ते में एक बाधा है। वास्तव में, वह पूर्व की तुलना में उत्तरार्द्ध का अधिक सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकता था। एक बात के लिए, लोकप्रिय हिंसा का मुकाबला करने में, राज्य की हिंसा के मामले में हमारा उतना समर्थन नहीं होना चाहिए। गाँधीजी यह कहने के लिए पर्याप्त थे कि हिंसा किसी भी धर्म की पंथ नहीं है, जहां ज्यादातर मामलों में अहिंसा सभी के लिए अनिवार्य थी। उन्होंने हिंसा पर आपत्ति जताई क्योंकि जब यह अच्छा करने के लिए प्रकट होता है, तो अच्छा केवल अस्थायी था। इसके बारे में जो बुराई सामने आई, वह स्थायी थी।

गाँधीजी ने क्रांतिकारी वीरता और बलिदान को श्रेय से इनकार नहीं किया। लेकिन एक बुरे कारण के लिए वीरता और बलिदान शानदार ऊर्जा की बहुत बर्बादी करते हैं और वे इस पर ध्यान आकर्षित करके अच्छे कारण को चोट पहुंचाते हैं। गाँधीजी ने कहा, मुझे वीर और आत्म–बलिदान करने वाले क्रांतिकारी के सामने खड़े होने में कोई शर्म नहीं है क्योंकि मैं अहिंसक पुरुषों (सत्याग्रही) की वीरता के बराबर उपाय करने और निर्दोषों के रक्त से निष्कलंक बलिदान करने में सक्षम हूं। आत्म–बलिदान में से एक निर्दोष आदमी एक लाख लोगों के बलिदान की तुलना में एक लाख गुना अधिक शक्तिशाली है, जो दूसरों को मारने के कार्य में मर जाते हैं। उन्होंने यह भी देखा कि आतंकवाद की नीति के पीछे यह धारणा है कि आतंकवाद यदि पर्याप्त माप में लागू किया जाता है। वांछित परिणाम का उत्पादन होगा, अर्थात, अत्याचारी की इच्छा के लिए प्रतिकूल मोड़। लेकिन लोगों का मानना है कि वे कभी भी तानाशाह की इच्छा को पूरा नहीं करेंगे, और न ही तानाशाह के अपने तरीकों से जवाबी कार्रवाई करेंगे, अत्याचारी को अपने आतंकवाद के साथ जाने के लिए इसके लायक नहीं मिलेगा।

हम उम्मीद कर रहे हैं कि उसका फैसला हमारे पक्ष में होगा। लेकिन यह मानते हुए कि वह हमारे खिलाफ है, हमारी स्थिति क्या होगी? मेरा पत्र लंबा हो गया है, इसलिए मुझे यहाँ रुकना चाहिए। अगर मैंने ऐसा कुछ भी कहा है जो आपको गलत प्रतीत होता है, मुझे आशा है कि आप मुझे क्षमा करेंगे। मुझे पता है कि आप हमेशा लोगों को खुलकर और खुलकर बात करना पसंद करते हैं। यही वह है जिसने मुझे इस फ्रैंक और लंबे पत्र को लिखने में अपनाया है।

आदरणीय प्रणाम के साथ, आप का स्नेह, सुभाष

महात्मा गाँधी का "बा" को पत्र

प्रिय कस्तूरबा...

प्रति,
कस्तूरबा गाँधी
नाडियाड

प्रिय कस्तूरबा,

मैं जानता हूं कि तुम मेरे साथ रहने की इच्छुक हो। मुझे लगता है कि हम दोनों को अपने–अपने कार्य में लगे रहना चाहिए। फिलहाल यह उचित होगा कि तुम जहां हो वहीं ठहरो। यदि तुम सभी बच्चों को अपने बच्चों की तरह देखो तो जल्द ही आने वाले की कमी का एहसास तुम्हें नहीं होगा। जब कोई वृद्धावस्था की ओर बढ़ता है तो यही कर सकता है। जब तुम दूसरों से प्रेम और उनकी सेवा करने लगोगी तो तुम्हें भीतर से सुख की अनुभूति होगी। जो लोग बीमार हैं, उनसे रोज अलसुबह मिलने और उनकी सेवा करने का नियम तुम्हें बना लेना चाहिए। उन लोगों के लिए विशेष आहार तैयार होना चाहिए, जिन्हें इसकी जरुरत है। तुम्हें उन्हें इस बात का एहसास कराना चाहिए कि वे अजनबी नहीं हैं। उनके स्वास्थ्य में सुधार आना चाहिए।

तुम्हें निर्मला से धर्म और अन्य उपयोगी विषयों पर बातचीत करनी चाहिए। तुम उससे भागवत पढ़कर सुनाने के लिए भी कह सकती हो। वह भी इसमें रुचि लेगी। यदि तुम इस तरह अपने आपको सेवा–कार्य में व्यस्त रखोगी तो मुझ पर विश्वास करो, तुम्हारा मन सदैव आनंदित रहेगा। और यकीनन तुम पंजाबी भाइयों के खाने और अन्य जरूरतों को पूरा करने की जिम्मेदारी छोड़ना नहीं चाहोगी।

तुम्हारा
मोहनदास करमचंद गाँधी

बापू महान, बापू महान!

❐ विवेक कुमार

बापू महान, बापू महान
ओ परम तपस्वी परम वीर
ओ सुकृति शिरोमणि, ओ सुधीर
कुर्बान हुए तुम, सुलभ हुआ
सारी दुनिया को ज्ञान
बापू महान, बापू महान!!

बापू महान, बापू महान
हे सत्य–अहिंसा के प्रतीक
हे प्रश्नों के उत्तर सटीक
हे युगनिर्माता, युगाधार
आतंकित तुमसे पाप–पुंज
आलोकित तुमसे जग जहान!

बापू महान, बापू महान!!

गाँधी और चीनी युवा

1925 में कुछ समय के लिए एक युवा चीनी छात्र भारत आया। उन्होंने टैगोर और गाँधी के बारे में सुना था। वे स्वयं एक कवि और काफी वादे के लेखक थे। वह शांतिनिकेतन में टैगोर के विश्व भारती में शामिल हुए और वहां उन्होंने तत्काल लोकप्रियता हासिल की। बस जब चीजें समृद्ध लगने लगीं, तब भी बड़ी परेशानी हुई। उसे जासूस होने का शक था। उसे देखा गया। इससे वह इतना परेशान हो गया कि उसने नौकरी छोड़ने का फैसला कर लिया। लेकिन क्या वह एक अजीब देश में जा सकता था? उन्होंने गाँधी को लिखा कि उनके सारे दर्द और दुःख दर्द को दूर किया जाए। गाँधी तब कलकत्ता में देशबंधु चित्तरंजन दास स्मारक के लिए धन एकत्र कर रहे थे। उसने दस लाख रुपये की अपील की थी और मिल भी रही थी। युवा चीनी को गाँधी के सचिव महादेव देसाई का एक त्वरित उत्तर मिला, उन्होंने उनसे कलकत्ता आने और गाँधी से मिलने के लिए कहा। युवा बिना समय बर्बाद किए और जल्द ही गाँधी की उपस्थिति में खड़े हो गए।

बापू ने उसे सीधे आँख से देखा लेकिन उसकी आवाज में बहुत दया थी क्योंकि उसने पूछा, शांतिनिकेतन के लोग मेरे अच्छे दोस्त हैं – वे हमेशा दूसरे देशों के लोगों का स्वागत करते हैं। उन्होंने आप पर शक क्यों किया? क्या आप जासूस हैं?

युवा चीनी ने प्रभावशाली कैडर के साथ जवाब दिया – 'वे अच्छे लोग हैं' मैं शांतिनिकेतन पसंद करता हूं। वे मेरे बारे में परेशान हो गए होंगे। लेकिन मैं उनके संदेह से बहुत आहत हूं। मैं जासूस नहीं हूं। मैं केवल भारत का अध्ययन करने के लिए उत्सुक एक छात्र हूं।

मैं आपका वचन स्वीकार करता हूँ, बापू ने कहा। क्या मैं आपके लिए गारंटी ले सकता हूं और आपको शांतिनिकेतन वापस भेज दूंगा। वे आपकी व्यक्तिगत ईमानदारी के लिए मेरी प्रतिज्ञा का सम्मान करेंगे।

उन्होंने युवाओं का जायजा लिया था और उन्हें पसंद किया था। युवा चीनी गहराई में चला गया, उसकी आँखों में आँसू भर आए।

कृपया मुझे तुम्हारे साथ रहने दो, वह जबरदस्ती भीख माँगता है। मुझे अपने आश्रम में प्रवेश करने दो ताकि मैं तुम्हारे साथ रह सकूं।

लेकिन, गाँधीजी ने अपनी सफल–असफल मुस्कान के साथ कहा, मेरा आश्रम शांतिनिकेतन की तुलना में एक कठिन जगह है। आपको अपनी पढ़ाई के अलावा कठिन शारीरिक श्रम करना होगा।

चीनी कड़ी मेहनत के आदी हैं, और मुझे डर नहीं है, तैयार जवाब था।

गाँधी ने तब आश्वासन दिया, और जैसा कि वे युवाओं के चीनी नाम का उच्चारण नहीं कर सकते थे, उन्हें आश्रम में उपयोग के लिए दो भारतीय नामों की पसंद की पेशकश की। युवाओं ने शांति को चुना, और भारत में अपने सभी वर्षों के दौरान, उन्हें शांति के रूप में जाना जाता था। शांति साबरमती आश्रम में शामिल हो गए, जबकि शांतिनिकेतन में पहले की तरह, वह जल्द ही सभी के साथ पसंदीदा बन गए। उसके पास एक बच्चे का दिल था और मस्ती से भरा था। छोटे बच्चे उसके लिए विशेष रूप से पसंद करते थे क्योंकि वह उनके लिए लगभग कुछ भी नहीं के लिए अंतहीन खिलौने बना सकता था!

उन्हें रसोई और कपड़े धोने के लिए पानी लाने का काम आवंटित किया गया था। बेशक वह कुछ ही समय में कताई उठाय चीनी के लिए अपनी उंगलियों के साथ बेतरतीब हैं। जैसे–जैसे महीनों बीतते गए एक सूक्ष्म परिवर्तन उसके ऊपर आया। वह कठिन से कठिन काम करने लगा। ऐसा कोई काम नहीं था जो वह नहीं करेगा– वह मैला ढोने वाले दस्ते में शामिल हो गया। उन्होंने गाँधी के लेखन का भी ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। फिर एक दिन वह लिखने बैठ गया। उन्होंने पेज और ढेर के बाद पेज लिखा, इससे पहले कि वह तेजी से चढ़े। वह कागज पर क्या स्थापित कर रहा था, रात और दिन श्रम कर रहा था। लंबे समय तक वह समाप्त हो गया था उन्होंने बड़े करीने से पन्नों को क्रम से लगाया और उन्हें गाँधी के कमरे में स्थापित कर दिया।

दीनबन्धु सी.एफ.एंड्रयूज

गाँधी उत्तम सौम्यता और अटूट कठोरता का एक दुर्लभ संयोजन है। उनका मन एक बार पंखुड़ी की कोमलता और स्टील की कठोरता पर टिक गया था। दिवंगत श्री सी. एफ. एंड्रयूज कुछ मायनों में एक विपरीत आदर्श भी था। कठोर या कठोर होना उसके अंदर कभी नहीं था। कभी–कभी उनकी उदारता उनके ज्ञान से बाहर निकल जाती है। 1926 में कुछ समय था, एंड्रयूज साबरमती में सत्याग्रह आश्रम में गाँधी के साथ रह रहे थे। अब और फिर से उन्हें गाँधी के साथ आने और आराम करने, सभी सार्वजनिक व्यस्तताओं को काटने और केवल लेखन ने उन्हें खुश करने से बेहतर कुछ भी नहीं पसंद किया। इस अवसर पर जब वे सत्याग्रह आश्रम में थे, दक्षिण अफ्रीका के एक जिले के कांग्रेस कार्यकर्ता साबरमती पहुंचे। वह एक नौजवान था और बहुत तकलीफ में था। उन्होंने अपनी जिला समिति के सचिव का पद संभाला था। उनके जिले में कांग्रेस के काम के लिए एक बड़ी राशि उनके हाथों में आ गई थी, और उन्हें एक अच्छे सचिव की तरह, यह सारा काम उनके द्वारा सौंपे गए विभिन्न मदों पर उदारतापूर्वक खर्च करना पड़ा। केवल एक छोटी सी खराबी थी। उन्होंने उचित खातों, बहुत कम जारी प्राप्तियों या प्राप्त वाउचर जैसे कुछ भी नहीं रखा था। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें अपनी समिति को लगभग एक हजार रुपये का हिसाब देना पड़ा या उनके लिए यह राशि मिल गई। जब वह या तो खातों को जमा करने या अच्छी राशि बनाने के लिए बुलाया गया तो वह चकित रह गया। उन्होंने निश्चित रूप से अपने लिए एक पैसा नहीं लिया था। पूरी रकम कांग्रेस के काम में खर्च हो गई थी। इस बारे में बिल्कुल भी संदेह नहीं था। उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें नियमित खाते रखना चाहिए था, लेकिन समिति के लिए एक हजार रुपये या उस मामले के लिए किसी और को खोजने का सवाल भी कहां था? उन्होंने जिला कांग्रेस के सचिव के रूप में प्रेम के एक शुद्ध श्रम के रूप में काम किया था, और वह भी स्थानीय हाईस्कूल में एक शिक्षक के रूप में अपने पद से इस्तीफा देने के बाद। अपनी चंचलता के बीच में उसने अचानक मन बना लिया कि वह गाँधी के पास जाएगा, उसे सब कुछ बताएगा, और एक कृतघ्न समिति से सुरक्षा मांगेगा! गाँधी ने पूरी कहानी धैर्य से सुनी। परेशान और आक्रोशपूर्ण जिला सचिव के तीखे तेवर सुनकर एंड्रयूज को अपनी ओर से बैठा लिया गया। गाँधी ने धीरे से लेकिन उनसे लगातार कई सवाल पूछे और स्थिति को पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया। इसमें कोई संदेह नहीं था कि युवक ने किसी भी पैसे का दुरुपयोग नहीं किया था। वह केवल इस बात में दोषी था कि उसने उचित खातों का रखरखाव नहीं किया था।

तुम मुझसे क्या उम्मीद करते हो? गाँधी से पूछा। नौजवान चाहते थे कि गाँधी अपनी जिला समिति को लिखें और उनसे उन्हें भगाने के लिए कहें। एंड्रयूज सभी सहानुभूति थे, लेकिन गाँधी के चेहरे पर एक सख्त नजर थी। नहीं, मैं ऐसा कोई पत्र नहीं लिखूंगा, गाँधी ने कहा, इसके विपरीत, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि आपका आचरण अक्षम्य था, सार्वजनिक धन का हर पैसा एक पवित्र विश्वास है। मेरे लिए इस तरह के हर पैसे के लिए बेहिसाब एक पैसा गलत है। उचित लेखा–जोखा सार्वजनिक रूप से काम करने वाले के लिए केवल रुपए और अन्न की बात नहीं है, बल्कि उसके चरित्र का हिस्सा है। लिखित में अधिकांश खाते प्राप्त करने और आवश्यक वाउचर का उत्पादन करने में भी आपको सक्षम होना चाहिए। अन्यथा आपकी समिति को आपसे पैसे मांगने का पूरा अधिकार है। यदि आवश्यक हो तो आपको किसी भी संपत्ति या अन्य संपत्ति को बेचना चाहिए जो आपको इस तरह के ऋण का निर्वहन करना पड़ सकता है। युवक उसकी गहराइयों से चौंक गया। वह पहले कभी महात्मा की उपस्थिति में नहीं था। उन्होंने संत से सहानुभूति और अनुपालन की अपेक्षा की थी। वह टूट गया और एक बच्चे की तरह रोने लगा। एंड्रयूज बहुत परेशान था। वह गाँधी के साथ तर्क करने लगे कि यह 'पश्चाताप' करने वाले युवक से निपटने का तरीका नहीं था। हां, मैं चाहता हूं कि वह पश्चाताप करें, गाँधी ने कहा, और वह केवल पूर्ण आत्म–सुधार करके पश्चाताप कर सकते हैं। मात्र

जब गाँधीजी ने सूट-बूट छोड़ धोती अपनाई

❐ रूचिरा गुप्ता

मोहनदास करमचंद गाँधी ने 1888 में कानून के एक छात्र के रूप में इंग्लैंड में सूट पहना था। इसके 33 साल बाद 1921 में भारत के मदुरई में जब सिर्फ धोती में वो दिखें तो इस दरम्यां एक दिलचस्प बात हुई थी जो बहुत कम लोगों को पता होगा। यह बात है बिहार के चंपारण जिले की जहां पहली बार भारत में उन्होंने सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया था।

कैसे बीता था महात्मा गाँधी का आखिरी दिन?

गाँधी जी चंपारण के मोतिहारी स्टेशन पर 15 अप्रैल 1917 को तीन बजे दोपहर में उतरे थे। वो वहां के किसानों से मिले। वहां के किसानों को अंग्रेज हुक्मरान नील की खेती के लिए मजबूर करते थे। इस वजह से वो चावल या दूसरे अनाज की खेती नहीं कर पाते थे। हजारों भूखे, बीमार और कमजोर हो चुके किसान गाँधी को अपना दुख–दर्द सुनाने के लिए इकट्ठा हुए थे। इनमें से आधी औरतें थीं। ये औरतें घूंघट और और पर्दे में गाँधी से मुखातिब थीं।

जब चंपारण पहुंचे गाँधी : औरतों ने अपने ऊपर हो रहे जुल्म की कहानी उन्हें सुनाई। उन्होंने बताया कि कैसे उन्हें पानी लेने से रोका जाता है, उन्हें शौच के लिए एक खास समय ही दिया जाता है। बच्चों को पढ़ाई–लिखाई से दूर रखा जाता है। उन्हें अंग्रेज फैक्ट्री मालिकों के नौकरों और मिडवाइफ के तौर पर काम करना होता है। उन लोगों ने गाँधी जी को बताया कि इसके बदले उन्हें एक जोड़ी कपड़ा दिया जाता है। उनमें से कुछ को अंग्रेजों के लिए दिन–रात यौन दासी के रूप में उपलब्ध रहना पड़ता है।

क्या कहा था महात्मा गाँधी ने गो रक्षा पर

गाँधी जी जब चंपारण पुहंचे तब वो कठियावाड़ी पोशाक पहने हुए थे। इसमें ऊपर एक शर्ट, नीचे एक धोती, एक घड़ी, एक सफेद गमछा, चमड़े का जूता और एक टोपी थी। ये सब कपड़े या तो भारतीय मीलों में बने हुई थी या फिर हाथ से बुनी हुए थीं। जब गाँधी जी ने सुना कि नील फैक्ट्रियों के मालिक निम्न जाति के औरतों और मर्दों को जूते नहीं पहनने देते हैं तो उन्होंने तुरंत जूते पहनने बंद कर दिए।

गाँधी जी ने 16 और 18 अप्रैल 1917 के बीच चार खत लिखे। दो उन्होंने ब्रितानी अधिकारियों को लिखे जिसमें उन्होंने ब्रितानी आदेश को नहीं मानने की मंशा जाहिर की थी। ब्रितानी अधिकारियों ने उन्हें चंपारण छोड़ने का आदेश दिया था। सात दशक बाद भी गाँधी से इतना खौफ क्यों?इनमें से दो खत उन्होंने अपने दोस्त को लिखे थे जिसमें उन्होंने चंपारण के किसानों की दयनीय हालत के बारे में लिखा था और मदद मांगी थी। उन्होंने खासतौर पर महिलाओं की जरूरत पर बल दिया था जो स्कूल, आश्रम चलाने में मदद कर सकें। इसके अलावा बयानों और कोर्ट की गिरफ्तारियों के रिकॉर्ड संभाल कर रख सकें।

यह दो सौ सालों की गुलामी का अंत था। पिछली बार मैं मोतिहारी गई थी तो यह देखकर खुश हुई कि वहां नील का पौधा मुझे गाँधी संग्राहलय के अलावा कहीं और देखने को नहीं मिला।

महात्मा गाँधी की लाठी

महेन्द्र पाल

"ली सच की लाठी उसने
तन पर भक्ति का चोला
सबक अहिंसा का सिखलाया
वाणी में अमृत उसने घोला
बापू के इस रंग में रंग कर
देश का बच्चा– बच्चा बोला
कर देगें भारत माँ पर अर्पण
हम अपनी जान को
हम श्रद्धा से याद करेगें
गाँधी के बलिदान को
चरखे के ताने बाने से उसने
भारत का इतिहास रचा
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
सबमें इक विश्वास रचा
सहम गया विदेशी फिरंगी
लड़ने का अभ्यास रचा
मान गया अंग्रेजी शासक
बापू की पहचान को
हम श्रद्धा से याद करेगें
गाँधी के बलिदान को।"

श्रद्धा के निमित्त

इसलिये मुझे आपके सामने चरखा रखते हुये खुशी होती है–आप चाहें तो उसे शौक ही समझे–ताकि उससे आपके जीवन में उत्साह और सुगन्ध पैदा हो, आपको शान्ति और आनन्द प्राप्त हो। इससे आपको ब्रह्मचर्य का जीवन बिताने में सहायता मिलेगी। श्रद्धा विद्यार्थी अवस्था में बड़े महत्व की वस्तु होती है। बहुत सी बातें ऐसी होती हैं, जिन्हें आपको मान लेना पड़ता है। आप उन्हें सिर्फ इसलिये स्वीकार कर लेते हैं कि वे आपको अपने गुरु से मिलती है। उदाहरणार्थ–भूमिति के कुछ साध्य समझने में मेरे लिये बहुत कठिन थे। मैंने उन्हें यों ही मान लिया और आज मैं उन्हें केवल समझ ही नहीं लेता हूँ, बल्कि भूमिति के अध्ययन में उतनी ही आसानी से डूबा रह सकता हूँ जितना अपने मौजूदा काम में। अगर आप श्रद्धापूर्वक चरखा चलायें, तो निश्चित जानिये कि किसी दिन आप यह स्वीकार करेंगे कि एक बूढ़े ने इसके बारे में कभी जो कहा था वह अक्षरशः सही था। एक शास्त्रवेत्ता ने गीता के निम्नलिखित श्लोक को (2–40) चरखे पर लागू किया, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं।

इसमें प्रयत्न व्यर्थ नहीं जाता, इसमें कोई बाधा भी नहीं है। इस धर्म से थोड़े से अभ्यास से भी मनुष्य महान विपत्ति से बच जाता है।

"मेरी नजर में तो सारे हिन्दुस्तान की ऐसी एकता का जीता जागता नमूना और इसीलिए, हमारे राजनीतिक मकसद को पाने के लिए अहिंसा को अनिवार्य जरिया मानने की भी जीती निशानी बिना शक अगर कुछ है तो वह चरखा यानी खादी ही है। केवल वही लोग जो अहिंसावृत्ति के विकास और हिन्दू–मुसलमानों में चिरस्थायी एकता कायम करने के कायल होंगे, नियम और निष्ठा के साथ चरखा कातेंगे।"

गाँधी जी ने खिलाफत आंदोलन के दौरान हिन्दू–मुसलमानों को एक मंच पर लाने की कोशिश चरखे के जरिए ही की। वे चरखा और खादी अपनाने पर न सिर्फ जोर देते हैं बल्कि इसे एकता के लिए जरूरी मानते हुए मजहबी फर्ज तक कह डालते हैं। हकीम अजमल खां के तुरंत बाद वे मौलाना अब्दुल बारी को एक खत लिखते हैं। वे उनसे कहते हैं–"खुद मैं बहुत गहराई से सोचने पर इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि ऐसी एक ही चीज है, जिसे हिन्दू–मुस्लिम एकता की साफ और असरदार निशानी माना जा सकता है और तो वह है इन दोनों समुदायों के आम लोगों में चरखे का और हाथ के कते सूत से हाथ करघे पर बुनी शुद्ध खादी को अपनाना। जब तक स्वराज्य हासिल नहीं हो जाता है तब तक हर एक मर्द, औरत और बच्चे को अपना मजहबी फर्ज समझकर रोज चरखा चलाना चाहिए।"

बतौर कांग्रेस अध्यक्ष गाँधी जी 1924 में मोहम्मद अली को एक खत लिखते हैं। इस खत में भी एकता की बात वे दोहराते हैं और दो टूक लफ्जों में कहते हैं, "यह बिल्कुल साफ है कि हिन्दू, मुसलमान, सिख, पारसी, ईसाई तथा दूसरी जातियों की एकता के बिना स्वराज्य की बात करना ही व्यर्थ है, यदि हमें आजादी हासिल करनी है तो विभिन्न समुदायों को मित्रता के अटूट बंधन में बांधना ही होगा।"

"अगर हम देश में बढ़ती मुफलिसी की हालत के बारे में सोच सकते हैं तो सोचें और यह समझें कि चरखा ही इस रोग की अकेली दवा है तो वही एक काम हमें (आपस में) लड़ने के लिए फुरसत नहीं मिलने देगा।"

एक ओर, गाँधी जी के लिए चरखा आपस में लड़ने से बचने का रास्ता है तो दूसरी ओर यह गांव और गरीब से जुड़ने का जरिया भी है। पटना में खिलाफत सम्मेलन में गाँधी जी लोगों को खद्दर अपानाने को कहते हैं क्योंकि "हिन्दू– मुसलमान, दोनों के लिए गांव के गरीबों द्वारा काते गए सूत से बने खद्दर को छोड़कर अन्य वस्त्र धारण करना पाप है। भारत के गांवों में ऐसे लाखों हिन्दू और मुसलमान हैं, जिन्हें दोनों वक्त खाना भी नसीब नहीं होता है। गांव में भूखे मरने वालों की खातिर खादी और चरखे को अपनाएं। खद्दर को अपनाने से दो उद्देश्य सिद्ध होंगे। एक तो आपको अपने लिए कपड़ा मिल जाएगा दूसरे आप गांवों के लाखों भूखे गरीबों की सहायता कर सकेंगे। खुदा के वास्ते और गांवों के लाखों गरीबों के वास्ते आप सब आज ही बल्कि इसी क्षण से चरखा और कताई को अपना लें।"

ऐसा नहीं है कि गाँधी जी महज रणनीति के तहत हिन्दू–मुसलमान एकता के नाम पर चरखा अपनाने की बात पर कह रहे हैं। गाँधी जी के लिए यह यकीन का सवाल था, उन्हें यकीन था कि चरखा ही सभी लोगों को एक साथ जोड़ेगा। एकता की ऐसी शिद्दत भारत के किसी दूसरे नेता में नहीं दिखाई देती है। बकौल गाँधी जी, "जब तक हम सूत कातने की इस साधना को नहीं अपनाएंगे तब तक प्रेम की गांठ नहीं बंधेंगी। यदि समस्त जगत को आप प्रेम की गांठ से बांध लेना चाहते हैं तो दूसरा उपाय ही नहीं है। हिन्दू–मुसलमान प्रश्न के लिए भी दूसरा कोई उपाय नहीं है। मेरी इस प्रार्थना को समझकर रोज आधा घंटा चरखा अवश्य चलाएं। उससे आपकी कोई हानि नहीं है और उससे देश की दरिद्रता दूर होगी। यदि आप अस्पृश्यता दूर न कर सकें तो धर्म का नाश हो जाएगा। आज तो वैष्णव धर्म के नाम पर अंत्यजों का नाश हो रहा है। असपृश्यता निवारण, हिन्दू – मुस्लिम एक्य और खादी यह मेरी त्रिवेणी है।"

उत्पादन के किसी औजार का ऐसा समाजवादी तसव्वुर, किसी नेता नहीं किया जैसा गाँधी जी ने चरखा का किया है। गाँधी जी चरखे के जरिए हर तरह के विभेद को खत्म करने की बात

बापू के साथ कुछ पल

एक साक्षात्कार की निम्नलिखित रिपोर्ट, जो मेरठ के श्री एस। डब्ल्यू। क्लेमेंस ने महात्मा गांधी के साथ 1920 की शुरुआत में, लखनऊ में प्रकाशित एक ईसाई पत्रिका, इंडियन विटनेस में छपी थी:

"जैसा कि मैंने श्री गांधी के साथ बात की, मैंने उनकी पोशाक की सादगी पर ध्यान दिया। उन्होंने ठंड से बचाने के लिए अपने शरीर के ऊपर फेंके गए कम्बल के साथ मोटे सफेद कपड़े पहने। एक छोटी सी सफेद टोपी उनके एकमात्र सिर को ढँक रही थी।" वह मेरे सामने फर्श पर बैठ गया, मैंने खुद से पूछा, यह छोटा आदमी अपने पतले चेहरे और बड़े उभरे हुए कान और शांत भूरी आँखों के साथ कैसे हो सकता है, वह महान गांधी हो, जिसके बारे में मैंने बहुत सुना है। वह बात करना शुरू कर दिया। मैं उन सभी तरीकों से सहमत नहीं हूं जो श्री गांधी वांछित अंत के बारे में बताने के लिए काम करते हैं, लेकिन मैं खुद इस व्यक्ति की व्यक्तिगत गवाही को सहन करना चाहता हूं। श्री गांधी एक आध्यात्मिक व्यक्ति हैं। विचारक। मेरे संक्षिप्त साक्षात्कार में, मेरे पास उनके साथ समान हृदय–सम्मत संगति थी क्योंकि मेरे पास भगवान के संतों के साथ समय के स्कोर थे। मैंने ज्ञान लिया कि यह व्यक्ति ईसाई शक्ति के स्रोत के लिए था और महान मसीह से सीखा था। ।"श्री गांधी, पश्चिम के राष्ट्र पूर्व और विशेष रूप से भारत के सर्वांगीण विकास को आगे बढ़ाने में क्या कर सकते हैं?" श्री गांधी ने अप्रत्यक्ष रूप से इस सवाल का जवाब दिया, "भारत अभी अप्रकाशित होने की स्थिति में है। उसने बहुत कुछ सीखा है जो बेकार और लाभहीन है। पश्चिम के अपने अवलोकन और विशेष रूप से अपने देश से, मैंने दो उत्कृष्ट तथ्य सीखे हैं: पहला, स्वच्छ, पदमे, दूसरा, ऊर्जा। मैं पूरी तरह से आश्वस्त हूं कि मेरे लोग आध्यात्मिक रूप से आगे नहीं बढ़ सकते, जब तक वे सफाई नहीं करते। आपके लोग आश्चर्यजनक रूप से ऊर्जावान हैं। बहुत हद तक, यह चीजों के बाद ऊर्जा है। यदि भारतीय लोग हो सकते हैं। ठीक उसी ऊर्जा की मात्रा का निर्देशन किया गया है, उन्हें बहुत आशीर्वाद मिलेगा।"

"श्री गांधी, क्या आप कृपया बताएंगे कि ईसाइयत भारत की विदेश में राष्ट्रवाद की भावना को देखते हुए किस तरह से सबसे अच्छी मदद कर सकती है?" उन्होंने जवाब दिया, "हम सभी को जिस चीज की सबसे ज्यादा जरूरत है, वह है सहानुभूति। जब मैं अफ्रीका में था, तो मुझे यह भ्रम हुआ कि मुझे राशन मिल गया है। मुझे कुछ कारीगरों के कुएं खोदने थे। शुद्ध बहने वाली धाराओं की खोज के लिए, मुझे गहरी खुदाई करनी थी। मेरे लोगों का अध्ययन करने के लिए यहां आने वाले लोगों में से बहुत से लोग केवल सतह को खरोंचते हैं। अगर वे सहानुभूति के माध्यम से गहरी खुदाई करेंगे तो उन्हें वहां जीवन की एक धारा शुद्ध और साफ मिलेगी। "और आप कृपया मुझे बताएंगे, श्री गांधी, किस पुस्तक या व्यक्ति ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया है?" बेशक, मैं उन्हें वेदों और कई अन्य भारतीय पुस्तकों के बारे में कहने के लिए सुनने के लिए तैयार था जिनके साथ ईसाई लोगों को बातचीत करनी चाहिए; लेकिन मैं उस आदमी के होठों से तीन अंग्रेजी किताबों के उल्लेख को सुनने के लिए तैयार नहीं था जिसने उसके जीवन और विचार को आकार दिया था। उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि वे एक सर्वव्यापी पाठक नहीं थे, बल्कि बहुत अच्छे के एक सावधान चयनकर्ता थे। जिस क्रम में उन्होंने किताबों की बात की वह इस प्रकार थीं : द बाइबल, रस्किन, टॉलस्टॉय। बाइबल के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, "कई बार ऐसा हुआ जब मुझे नहीं पता था कि किस रास्ते को मोड़ना है। लेकिन मैं बाइबल और विशेष रूप से न्यू टेस्टामेंट में गया हूं, और अपने संदेश से ताकत खींची है।"

मैं यह जानने के लिए उत्सुक था कि हमारा मेरठ ग्रेजुएट्स एसोसिएशन, शहर के सबसे बेहतरीन शिक्षित पुरुषों से कैसे बना, जो शहर के कल्याण को आगे बढ़ा सके। प्रश्न के उत्तर में, उन्होंने मुझे यह एक शब्द दिया : मेहतर। उन्होंने कहा, "मैं उस शब्द को इसके सभी अर्थों में नियोजित करता हूं। अगर सदस्य बाहर निकलेंगे और शहर को साफ करने के लिए मदद का हाथ बंटाएंगे, तो शाब्दिक और नैतिक रूप से, वे एक महान काम करेंगे।

संकलन– शुभि कश्यप

के लिए खुद को एक वर्ग संघर्ष में फेंकने के लिए सही हैं?

महात्मा ने कहाः "मैं स्वयं हिंसा के बिना उनके लिए क्रांति कर रहा हूं।"

किसानों, जमींदारों, पूंजीपतियों और उनके सहयोगी, ब्रिटिश सरकार के खिलाफ किसानों और श्रमिकों की क्रांति के सामने आपका रवैया क्या होगा? और यह भी कि, एक स्वतंत्र भारत में, एक प्रोटेक्टोरेट के तहत भारत में, एक भारत में, एक डोमिनियम स्टेटस वाले भारत में, या एक भारत में, ऐसी परिस्थिति में, किसी भी तरह की परिस्थितियाँ हों तो आपका रवैया कैसा होगा?

गाँधी ने चुपचाप उत्तर दियाः "मेरा दृष्टिकोण बेहतर–बंद वर्गों को उन ट्रस्टियों में परिवर्तित करना होगा जो पहले से ही उनके पास हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वे पैसा अपने पास रखेंगे, लेकिन उन्हें उन लोगों के लाभ के लिए काम करना होगा जिन्होंने उन्हें अपनी संपत्ति खरीदी थी और ऐसा करने लिए उन्हें would कमीशन प्राप्त होगा।"

एक "गैर–विशुद्ध प्रतिनिधि"

आप इस ट्रस्टीशिप के आयोजन पर कैसे भरोसा करते हैं? अनुनय से?

केवल मौखिक अनुनय द्वारा नहीं। मुझे अपने समय का सबसे बड़ा क्रांतिकारी कहा जाता है। यह शायद सही नहीं है, लेकिन मुझे विश्वास है कि मैं एक क्रांतिकारी, एक अहिंसक क्रांतिकारी हूं। मेरा हथियार नॉन–को–ऑपरेशन है। कोई भी लोगों` सहयोग, इच्छुक या मजबूर के बिना कामयाब नहीं हो सकता।

अब हम एक और सटीक प्रश्न रखते हैं :

क्या आप एक सामान्य हड़ताल का समर्थन करेंगे?

एक जनरल स्ट्राइक नॉन–को–ऑपरेशन का एक रूप है। एक जरूरी हिंसक नहीं है। मुझे इस तरह के आंदोलन का मुखिया बनाना चाहिए, अगर यह सभी कोणों से शांतिपूर्ण और न्यायसंगत था। इसे हतोत्साहित करना तो दूर, मुझे इसे प्रोत्साहित भी करना चाहिए।

हमने महात्मा से कहा कि हम अभी भी "ट्रस्टीज़" की उनकी प्रणाली को संचालित करने के उनके तरीके के रूप में बहुत स्पष्ट नहीं थे, कि हमें यह जानना चाहिए कि "ट्रस्टी" "कमीशन" के हकदार क्यों होंगे।

"उनके पास 'कमीशन' का अधिकार है क्योंकि पैसा उनके कब्जे में है। कोई भी उन्हें 'ट्रस्टी' होने के लिए मजबूर नहीं करता है। मैं उन्हें 'ट्रस्टी' के रूप में कार्य करने के लिए आमंत्रित करता हूं। मैं धन के सभी मालिकों को 'ट्रस्टी' के रूप में कार्य करने के लिए कहता हूं, जो यह कहना है कि धन–मालिकों के रूप में नहीं, बल्कि मालिकों द्वारा अनिवार्य है। जिनका उन्होंने शोषण किया है। मैं इस, कमीशन के लिए एक आंकड़ा तय नहीं करता हूं, लेकिन मैं उनसे केवल यह मांग करने के लिए कहता हूं कि वे क्या मानते हैं कि वे हकदार हैं।

"उदाहरण के लिए, मैं उस व्यक्ति से पूछूंगा, जिसके पास सौ रुपये हैं, पचास रुपये रखने के लिए और दूसरे को श्रमिकों को देने के लिए, लेकिन दस लाख रुपये वाले व्यक्ति के मामले में, मैं उसे एक प्रतिशत रखने के लिए कहूंगा। इसलिए आप देखते हैं कि मेरा 'कमीशन' एक निश्चित आंकड़ा नही होगा क्योंकि इससे गंभीर अन्याय होगा।"

हमने गाँधी के अर्थ को समझा, लेकिन हम यह सोचने में मदद नहीं कर सके कि यह एक आदर्शवादी का भ्रम था जो अभी भी "न्याय" में विश्वास करता है, इसके अलावा, हम इन विचारों के कुछ अचंभित थे, इस तरह के विश्वास के साथ व्यक्त किए गए, और हमने साक्षात्कार को फिर से शुरु करने से पहले कुछ पल इंतजार किया। फिर हमने पूछाः

महराजाओं और जमींदारों ने खुद को अंग्रेजी के साथ संबद्ध किया है, और आप उन्हें "ट्रस्टी" बनाना चाहते हैं, लेकिन आपके सबसे अच्छे अनुयायी जनता में से हैं, जो महाराज और जमींदारों को दुश्मन मानते हैं। अगर सत्ता में आने वाली जनता ने इन वर्गों को खत्म करने का फैसला किया, तो आप क्या रवैया अपनाएंगे?

महात्मा ने उत्तर दिया, और उनके पहले शब्दों में, मेरे भारतीय साथियों की राय में, जो मजदूर वर्ग के हैं, और भारत में जीवन की परिस्थितियों को पूरी तरह से जानते थे, पूरी तरह से गलत थेः

"वर्तमान समय में जनता जमींदारों को दुश्मन नहीं मानती है। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि उन्हें उस गलत के बारे में बताया जाए जो उनके लिए किया जा रहा है। मैं जनता को पूंजीपतियों को शत्रु नहीं

कुशलता से महात्मा भाग निकलेः "पहली जगह में मुझे दूसरों के बारे में अपनी राय रखने की परवाह नहीं है। यही कारण है कि रूस की स्थिति की सराहना करने मं असमर्थ हूं। इसके अलावा, विश्वास करना – इसके लिए सोवियत नेताओं ने खुद कहा है – कि सोवियत प्रणाली की स्थापना बल के रोजगार पर हुई है, मुझे इसकी अंतिम सफलता पर संदेह है।" किसानों और श्रमिकों को अपना भाग्य तय करने की पूर्ण शक्ति देने के लिए आपका ठोस कार्यक्रम क्या है? "समझौता, जीवन का महत्व।"

इसके बाद हम धार्मिक मामलों के बारे मे बोलने लगे और हमने गाँधी से पूछा कि क्या उन्हें लगता है कि हिंदू–मुस्लिम समस्या है। उनका जवाब निश्चित रूप से सकारात्क था। हमने तब उनसे पूछा कि क्या यह समस्या आम जनता के लिए महत्वपूर्ण है, और उस मामले में अगर उन्हें लगता है कि इसे राजनीतिक उपायों के आवेदन द्वारा, या एक समझौता द्वारा हटाया जा सकता है।

"मुझे नहीं लगता कि यह समस्या बहुत बड़ी डिग्री के लिए, जनता के बीच या कम से कम मौजूद है। राजनीतिक उपायों द्वारा इसे हल करना संभव नहीं है, लेकिन यह एक समझौता द्वारा किया जा सकता है, क्योंकि समझौता जीवन का सार है, क्योंकि यह जीवन के सिद्धांतों की जड़ों को नहीं छूता है।"

एक संघीय भारत में, शासकों के साथ स्वायत्त शासकों के रूप में, यदि विषयों ने ब्रिटिश भारत के लोगों के समान प्राथमिक राजनीतिक अधिकारों की मांग की थी और अपनी मांगों को लागू करने के लिए एक लोकप्रिय विद्रोह के साथ, सविनय अवज्ञा का सहारा लिया था, तो संघीय बलों को बुलाया जाएगा। विद्रोह को दबाने में प्रधानों की मदद करें? और उस मामले में आपका रवैया क्या होगा?

गाँधी ने हमें आश्चर्य मे देखा और इस रिपोर्ट को झूठ बताया।

हमने उनसे पूछा, उनकी राय में, "स्वतंत्रता" और "साम्राज्य मामलों में सहयोग की समानता" के बीच अंतर था।

"वहाँ है, और दोनों के बीच अंतर नहीं है। यह कहना है, एक साम्राज्य में दो स्वतंत्र राज्य पूरी तरह से अच्छी तरह से एक सहयोगी संघ में सहयोग कर सकते हैं। लेकिन जाहिर है कि भारत ऐसी स्थिति में नहीं है। नतीजन, एक ही साम्राज्य में ब्रिटेन के साथ भारत का एक संघ एक राज्य है, या एक शर्त है, जिसे स्वतंत्रता की तुलना नहीं की जा सकती है, एक तुलना के लिए केवल एक ही तरह की दो चीजों के बीच हो सकता है। इस मामले में चीजें एक ही तरह की नहीं हैं। इसलिए यदि ब्रिटेन और भारत के बीच एक समान पायदान पर, एक संघ होना है, तो साम्राज्य का अस्तित्व समाप्त होना चाहिए।" इस पर, हमने प्रतिशोध लिया है कि लाहौर कांग्रेस ने साम्राज्य की सीमाओं के भीतर समानता के संघ का कोई उल्लेख नहीं किया।

गाँधी ने जवाब दिया कि कांग्रेस में इसका उल्लेख करने का कोई फायदा नहीं था, लेकिन भाषण में इस सवाल को छुआ गया था।

क्या संघ की यह समानता वायसराय की वापसी की परिकल्पना करती है?

"साम्राज्य" का विचार पूरी तरह से गायब हो जाना चाहिए। लेकिन मेरे लिए यह निश्चित रूप से कहना असंभव है कि क्या रॉयल्टी के विचार को भी समाप्त किया जाना चाहिए। मैं वर्तमान में यह कहने में असमर्थ हूं कि ग्रेट ब्रिटेन का राजा भारत का राजा बनना बंद कर देगा।

यदि मेरे पास शक्ति है तो मुझे इसका उपयोग कभी नहीं करना चाहिए, या इसका उपयोग करने की अनुमति देना चाहिए, सविनय अवज्ञा को दबाने के लिए, कोई फक्र नहीं पड़ता कि यह कैसे या कहां से उत्पन्न हुआ है, क्योंकि मैं सविनय अवज्ञा को हमारे अस्तित्व का एक स्थायी कानून मानता हूं, जो पूरी तरह से हिंसा को दोहराता है, जो जानवर का नियम है। क्या यह सच है कि आपने उन लोकप्रिय आंदोलनों से अपना समर्थन वापस ले लिया, जो देशी राज्यों में पैदा हुए थे, राजकुमारों की मांग करने की वस्तु के साथ आंदोलन, वही अधिकार जो आप ब्रिटिश भारत में अंग्रेजों से मांगते हैं? क्या आप इस तथ्य का ध्यान रख रहे हैं कि क्या लाहौर कांग्रेस के समय से, जब स्वतंत्रता की घोषणा ने कलकत्ता में अपनाए गए समझौता प्रस्ताव को विस्थापित किया, तो भारत के युवाओं ने माना है कि यह एक स्वतंत्र भारत के लिए लड़ रहा था, जिसमें कोई भी नहीं

सैनिकों, जिन्होंने एक निहत्थे भीड़ पर आग लगाने से इनकार कर दिया था, उन्हें ट्रूस में शामिल किया गया था ? आप कैसे अहिंसा के अपने सिद्धांत के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं, क्योंकि इन लोगों को हिंसा के एक अधिनियम के लिए पार्टी करने से इनकार करने के लिए दंडित किया गया था? एक सैनिक जो आग लगाने के आदेश की अवहेलना करता है वह शपथ तोड़ता है जिसे उसने ले लिया है और खुद को आपराधिक अवज्ञा का दोषी मानता है। मैं अधिकारियों और सैनिकों को अवज्ञा करने के लिए नहीं कह सकता, क्योंकि जब मैं सत्ता में होता हूं तो मैं उन सभी अधिकारियों और उन्हीं सैनिकों को अवज्ञा करने के लिए नहीं कह सकता, क्योंकि जब मैं सत्ता में होता हूं तो मैं उन सभी अधिकारियों और उन्हीं सैनिकों का उपयोग करने की संभावना रखता हूं। अगर मैंने उन्हें अवज्ञा करना सिखाया तो मुझे डर होना चाहिए कि सत्ता में रहने पर वे भी ऐसा कर सकते हैं (पबप) लेकिन अगर वे जानबूझकर उन आदेशों को पूरा नहीं कर सकते जो उन्हें दिए गए हैं तो वे हमेशा अपने इस्तीफे सौंप सकते हैं। इन शब्दों से गाँधी यह स्वीकार करते हैं कि एक दिन शायद यह उनके लिए आदेश देने के लिए गिर जाएगा जिसके खिलाफ उनके सैनिकों का विवेक विद्रोह कर देगा। इस अंतिम उत्तर ने न केवल हमारा मोहभंग किया, बल्कि हमें चिंतित भी किया। जो लोग इस साक्षात्कार को पढ़ते हैं, वे अपने लिए उस विचार का निर्माण करने में सक्षम होंगे जो गाँधी भारत की राजनीति में खेलता है। किसी भी मामले में, हमारे लिए साक्षातकार ने एक किंवदंती के अंत को चिन्हित किया।

महात्मा गाँधी को सम्मान से याद किया

सबीना

"राष्ट्रपिता जो कहे जाते है,
प्यार से बापू उन्हें बुलाते हैं।
जिन्होंने देश को आजाद कराया।
सत्य अहिंसा का पाठ पढ़ाया।
महात्मा गाँधी वो कहलाते हैं।
उन्होंने विलास को छोड़कर,
अपना जीवन देश की आजादी में लगाया।
विदेशी कपड़ों को त्याग कर उसने।
देशी का महत्व समझाया।
कई आंदोलन और सत्याग्रह किये।
अंग्रेजों से लड़ने के लिए,
लोगों को अपने साथ किये,
देश को आजाद कराने के लिए।
सत्य अहिंसा के मार्ग पर चलकर।
अंग्रेजों से लड़ी लड़ाई।
अपना तन मन धन सब कुछ सौंप दिया,
अपने आपको पूरा झोंक दिया।
अंत तक लड़ी लड़ाई देश को आजादी दिलायी."

RNI No. UPHIN/2005/15853
सेवा संवाद अक्टूबर 2019
डाक पंजीकरण क्र. SSP/LW/NP-136/2019-21
प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ
कैलेण्डर वर्ष 2019–21
प्रेषण तिथि– प्रत्येक माह 26 व 30

76

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस, 17 सितम्बर के उपलक्ष्य में आयोजित

'सेवा सप्ताह अभियान' के अवसर पर

निःशुल्क चिकित्सा एवं स्वास्थ्य शिविर तथा फल वितरण

दिनांक 20 सितम्बर, 2019 दिन शुक्रवार स्थान : ग्राम- रसूलपुर आशिकअली, ब्लॉक गोसाईगंज, नगराम रोड, लखनऊ

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस न्यास, सी–91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) के लिए बर्फानी इण्टरप्राइजेज, ए–1, गोविन्दा बिल्डिंग, शाहनजफ रोड, हजरतगंज, लखनऊ, से मुद्रित। सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी